bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2081 युगाब्द 5126 कुल पृष्ठ 32 – सितम्बर द्वितीय 2024, वर्ष –36 : अंक –04

वर्तमान
कमल ज्योति

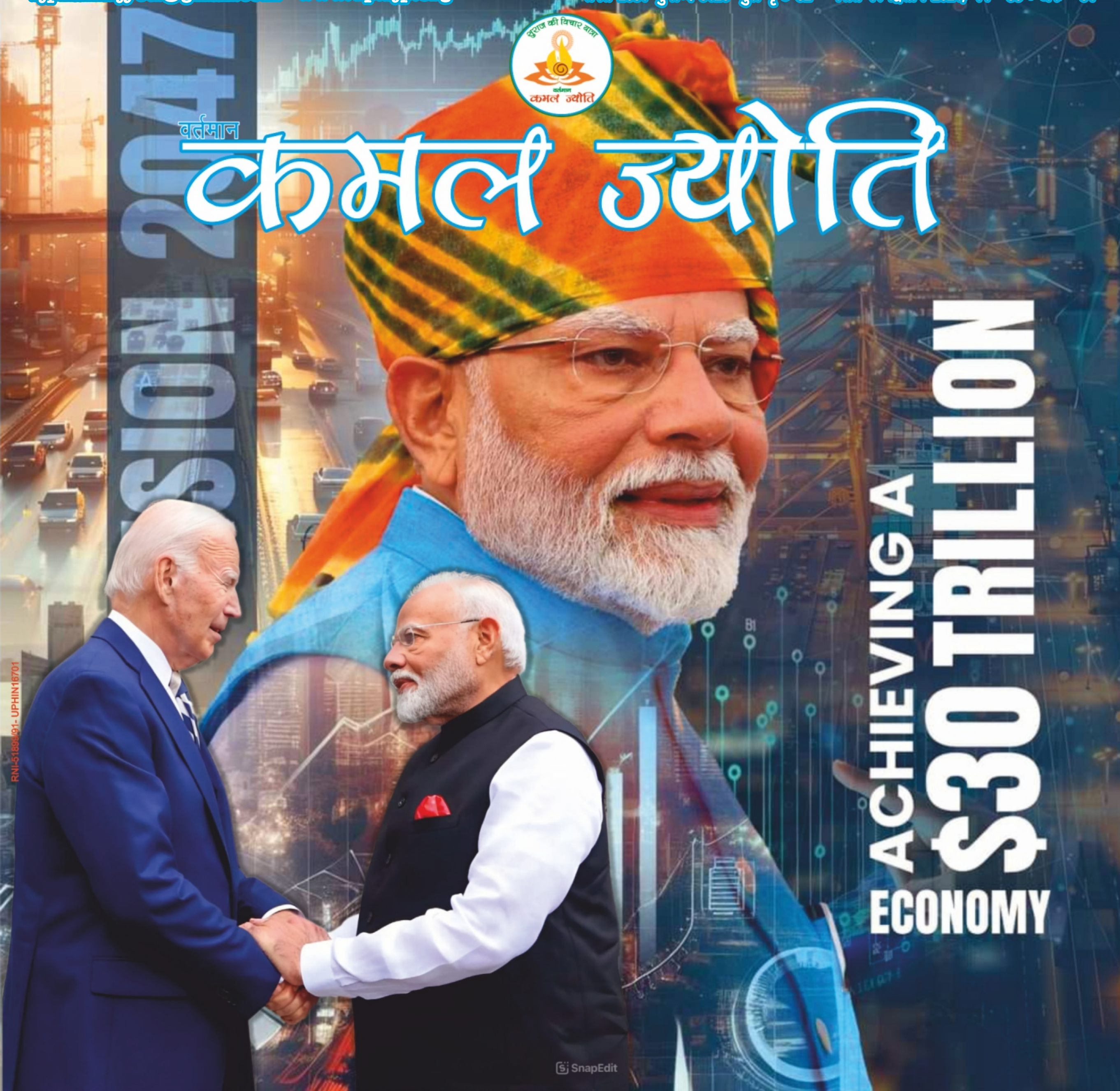

RNI-51899/91- UPHIN16701

₹20

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

नवरात्रि विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनायें!

सम्पादकीय

आज का युग धर्म शक्ति उपासना है!

भारतीय पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। हमारी प्राचीन संस्कृति कितनी विशाल, संपन्न एवं समृद्ध है। यदि नवरात्रि की बात करें तो यह पर्व भी भारतीय संस्कृति की महानता को दर्शाता है। विगत कुछ दशकों से देश विदेश की चुनौतियों को देखें तो आतंकवाद पूरे विश्व की मानवता को प्रभावित कर रहा है। इजराइल–ईरान की जंग, रूस–युक्रेन के युद्ध से विश्व दहशत में है। भारतीय जनमानस में महिला सशक्तीकरण की बात हो रही है। कुछ लोग विदेशों के उदाहरण देते हैं कि वहां की महिलाएं सशक्त हैं तथा उन्हें बहुत से अधिकार प्राप्त हैं। किंतु ये लोग अपने देश के इतिहास पर चिंतन एवं मनन नहीं करते हैं। वास्तव में भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जहां महिलाओं को पुरुषों के समान माना गया है। भारत में देवियों की पूजा–अर्चना की जाती है। देवियों का स्थान देवता से पहले आता है जैसे राधा कृष्ण, सीता राम आदि। भगवान शिव के साथ देवी पार्वती की भी पूजा की जाती है। भगवान राम के साथ देवी सीता की पूजा की जाती है। हमारी मान्यता के अनुसार शक्ति की देवी दुर्गा है। धन एवं समृद्धि की देवी लक्ष्मी है तथा ज्ञान की देवी सरस्वती है। मनुष्य को जीवन में जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह सब उन्हें इन देवियों से ही तो प्राप्त होती हैं। मानव जीवन को अनुशासन में रखने एवं आदर्श जीवन को स्थापित करने के लिए भगवान हमारे विश्वास और श्रद्धा के केंद्र है। उसी प्रकार राक्षसी प्रवृत्ति का विनास भी शक्ति स्वरूपा माँ भगवती करती हैं। शस्त्र–शास्त्र दोनों से देश चलता है।

प्राचीन काल से ही यह पर्व भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति का प्रतीक रहा है। कन्या पूजन इस बात को सिद्ध करता है कि भारतीय समाज में कन्या का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कन्या भ्रूण हत्या तथा नवजात कन्याओं का वध कर देने जैसी बुराइयां हमारे समाज में कब और कैसे सम्मिलित हो गईं, ज्ञात ही नहीं हो पाया। निरंतर घटता लिंगानुपात अत्यंत चिंता का विषय बना हुआ है। विदेशों में भारत की जिन बुराइयों का उल्लेख कुछ लोग बड़े गर्व के साथ करते हैं, वे बुराइयाँ तो हमारे समाज में कभी नहीं थीं। जिस समय विश्व के अधिकांश देश अशिक्षित एवं असभ्य थे, उस समय हमारा देश स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी था। पुरुष ही नहीं, अपितु महिलाएं भी शिक्षित थीं। वे शास्त्रार्थ करती थीं, अस्त्र–शस्त्र चलाती थीं। देवियों ने कितने ही राक्षसों का अकेले वध किया है। स्वतंत्रता आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना दुर्गावती, अन्तीबाई लोधी जी की वीरगाताओं से भी परिचित है। नारी को ईश्वर ने श्रेष्ठ बनाया है। अनेक मामलों में वह पुरुष से उच्च स्थान पर है। वह जन्मदात्री है। जिस प्रकार एक स्त्री अपने बालकों का पालन–पोषण कर लेती है, उस प्रकार एक पुरुष उनका पालन–पोषण नहीं कर पाता। स्त्री पूरे परिवार का संचालन सुंदर तरीके से करती है। नारी संस्कार की जननी है उसके अंदर ममता, स्नेह, उदारता,आत्मीयता ,प्यार ,दुलार आदि गुण जीवन का हिस्सा है । ईश्वर ने नारी को अत्यंत सबल बनाया है। कुटुम्ब परम्परा की रीढ़ है। घर को स्वर्ग नर्क दोनों बनाने की क्षमता रखती है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का सफल प्रदर्शन कर रही है। आज भारत निरन्तर ''विश्व बन्धु'' की भूमिका में है। दुनिया में विश्व युद्ध की बनी स्थिति में मध्यमार्ग का शान्तिदूत की भूमिका निभा रहा है। इसके साथ ही अपनी सैन्य सार्मथ्य को भी निरन्तर बढ़ा रहा है। विश्व की आशा के किरण नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं ''भारत युद्ध नहीं बुद्ध का देश'' लेकिन अगर कोई छेड़ेगा तो छोड़ेंगे नहीं। आइये नवरात्रि में शक्ति उपासना करें।भारत माता को शक्तिशाली विकसित बनायें।

भारत माता की जय का भाव है ''भारतीयता''

आप यहां इतनी दूर–दूर से आए हैं, कुछ पुराने चेहरे हैं, कुछ नए चेहरे हैं. आपका ये प्यार, ये मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है। मुझे वो दिन याद आते हैं। जब मैं पीएम भी नहीं था, सीएम भी नहीं था, नेता भी नहीं था। उस समय एक जिज्ञासू के तौर पर यहां आप सब के बीच आया करता था। इस धरती को देखना, इसे समझना, मन में कितने ही सवाल लेकर के आता था। जब मैं किसी पद पर नहीं था। उससे पहले भी मैं अमेरिका के करीब–करीब 29 स्टेट्स में दौरा कर चुका था। उसके बाद जब मैं CM बना तो टेक्नोलॉजी के माध्यम से आपके साथ जुड़ने का सिलसिला जारी रहा। PM रहते हुए भी मैंने आपसे अपार स्नेह पाया है, अपनत्व पाया है। 2014 में मेडिसन स्क्वायर, 2015 में सैन होसे, 2019 में ह्यूस्टन, 2023 में वॉशिंगटन और अब 2024 में न्यू यॉर्क, और आप लोग हर बार पिछला रिकॉर्ड तोड़ देते हैं।

मैं हमेशा से आपके सामर्थ्य को, भारतीय डायस्पोरा के सामर्थ्य को समझता रहा हूं। जब मेरे पास कोई सरकारी पद नहीं था, तब भी समझता था और आज भी समझता हूं। आप सब मेरे लिए हमेशा से भारत के सबसे मजबूत ब्रैंड एंबेसेडर रहे हैं। और इसलिए मैं आप सबको राष्ट्रदूत कहता हूं। आपने अमेरिका को भारत से, और भारत को अमेरिका से कनेक्ट किया है। आपका स्किल, आपका टैलेंट, आपका कमिटमेंट, इसका कोई मुकाबला नहीं है। आप सात समंदर पार भले आ गए हैं। लेकिन कोई समंदर इतना गहरा नहीं, जो दिल की गहराइयों में बसे हिंदुस्तान को आपसे दूर कर सके। मां भारती ने जो हमें सिखाया है, वो हम कभी भी भूल नहीं सकते। हम जहां भी जाते हैं, सबको परिवार मानकर उनसे घुल मिल जाते हैं। डायवर्सिटी को समझना, डायवर्सिटी को जीना, उसे अपने जीवन में उतारना, ये हमारे संस्कारों में है, हमारी रगों में है। हम उस देश के वासी हैं हमारे यहां सैकड़ों भाषाएं हैं, सैकड़ों बोलियां हैं। दुनिया के सारे मत हैं, पंथ हैं। फिर भी हम एक बनकर, नेक बनकर आगे बढ़ रहे हैं। यहां इस हॉल में ही देखिए, कोई तमिल बोलता है, कोई तेलुगु, कोई मलयालम, तो कोई कन्नड़ा, कोई पंजाबी, तो कोई मराठी, और तो कोई गुजराती, भाषा अनेक हैं, लेकिन भाव एक है। और वो भाव है– भारत माता की जय। वो भाव है – भारतीयता। दुनिया के साथ जुड़ने के लिए ये हमारी सबसे बड़ी strength है, सबसे बड़ी ताकत है। यही वैल्यूज़, हमें सहज रूप से ही विश्व–बंधु बनाती हैं। हमारे यहां कहा जाता है– तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। यानि जो त्याग करते हैं, वे ही भोग पाते हैं। हम दूसरों का भला करके, त्याग करके सुख पाते हैं। और हम किसी भी देश में रहें, ये भावना नहीं बदलती है। हम जिस सोसायटी में रहते हैं, वहां ज्यादा से ज्यादा योगदान करते हैं। यहां अमेरिका में आपने डॉक्टर्स के रूप में, रिसरचर्स के रूप में, Tech (टेक) Professionals के रूप में, Scientists के रूप में या दूसरे प्रोफेशन्स में जो परचम लहराया हुआ है, वो इसी का प्रतीक है। अभी कुछ समय पहले ही तो यहां T–20 क्रिकेट वर्ल्ड कप हुआ था और USA की टीम क्या गजब खेली, और उस टीम में यहां रह रहे भारतीयों का जो योगदान था वो भी दुनिया ने देखा है।

भारतीय डायस्वोरा 'राष्ट्रदूत' है: मोदी

दुनिया के लिए AI का मतलब है आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस। लेकिन मैं मानता हूं कि AI का मतलब अमेरिका–इंडिया। अमेरिका–इंडिया ये स्पिरिट है और वही तो नई दुनिया का एआई पावर है। यही AI स्पिरिट, भारत–अमेरिका रिश्तों को नई ऊंचाई दे रहा है। मैं आप सभी को, इंडियन डायस्पोरा को सैल्यूट करता हूं।

मैं दुनिया में जहां भी जाता हूं, हर लीडर के मुंह से भारतीय डायस्पोरा की तारीफ ही सुनता हूं। कल ही, प्रेसिडेंट बाइडेन, मुझे डेलावेयर में अपने घर ले गए थे। उनकी आत्मीयता, उनकी गर्मजोशी, मेरे लिए दिल छू लेने वाला मोमेंट रहा। ये सम्मान 140 करोड़ भारतीयों का है, ये सम्मान आपका है, आपके पुरुषार्थ का है, ये सम्मान यहां रहने वाले लाखों भारतीयों का है। मैं प्रेसिडेंट बाइडेन का आभार करूंगा

और साथ ही आपका भी आभार व्यक्त करूंगा।

2024 का ये साल पूरी दुनिया के लिए बहुत अहम है। एक तरफ दुनिया के कई देशों के बीच संघर्ष है, तनाव है तो दूसरी तरफ कई देशों में डेमोक्रेसी का जश्न चल रहा है। भारत और अमेरिका, डेमोक्रेसी के इस जश्न में भी एक साथ हैं। यहां अमेरिका में चुनाव होने वाले हैं और भारत में चुनाव हो चुके हैं। भारत में हुए ये इलेक्शन, ह्यूमन हिस्ट्री के अब तक के सबसे बड़े चुनाव थे, आप कल्पना कर सकते हैं, अमेरिका की कुल आबादी से भी करीब दोगुने वोटर्स, इतना ही नहीं पूरे यूरोप की कुल आबादी से ज्यादा वोटर्स, इतने सारे लोगों ने भारत में अपने वोट डाले। जब हम भारत की डेमोक्रेसी का उसका स्केल देखते हैं, तो और भी गर्व होता है। तीन महीने का पोलिंग प्रोसेस, 15 मिलियन यानि डेढ़ करोड़ लोगों का पोलिंग स्टाफ, एक मिलियन यानि 10 लाख से ज्यादा पोलिंग स्टेशन, ढाई हजार से ज्यादा पॉलिटिकल पार्टीज़, 8 हज़ार से ज्यादा कैंडिडेट्स, अलग–अलग भाषाओं के हजारों न्यूजपेपर्स, सैकड़ों रेडियो स्टेशन, सैकड़ों टीवी न्यूज चैनल, करोड़ों सोशल मीडिया अकाउंट्स, लाखों सोशल मीडिया चैनल्स, ये सब भारत की डेमोक्रेसी को वाइब्रेंट बनाते हैं। ये फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन के विस्तार का दौर है। इस लेवल की स्क्रूटनी से होकर हमारे देश की चुनावी प्रक्रिया गुज़रती है।

इस लंबी चुनावी प्रक्रिया से गुजरकर इस बार भारत में कुछ अभूतपूर्व हुआ है। क्या हुआ है? क्या हुआ है? क्या हुआ है? क्या हुआ है? अबकी बार – अबकी बार – अबकी बार । तीसरी बार, हमारी सरकार की वापसी हुई है। और ऐसा पिछले 60 सालों में भारत में नहीं हुआ था। भारत की जनता ने ये जो नया मैंडेट दिया है, उसके मायने बहुत हैं और बहुत बड़े भी हैं। ये तीसरे टर्म में हमें बहुत बड़े लक्ष्य साधने हैं। हमें तीन गुना ताकत, और तीन गुना गति के साथ आगे बढ़ना है, आपको एक शब्द याद रहेगा पुष्प। हां कमल मान लीजिए मुझे ऐतराज नहीं है। पुष्प और मैं इस पुष्प को डिफाइन करता हूं। पी फोर Progressive भारत, यू फोर Unstoppable भारत! एस फोर Spiritual (स्पिरिचुअल) भारत! एच फोर Humanity First को समर्पित भारत! पी फोर Prosperous भारत। यानि PUSHP– पुष्प की पांच पंखुड़ियां को मिलकर ही विकसित भारत बनाएंगे।

मैं भारत का पहला प्रधानमंत्री हूं, जिसका जन्म आज़ादी के बाद हुआ। आजादी के आंदोलन में करोड़ों भारतीयों ने स्वराज के लिए जीवन खपा दिया था, उन्होंने अपना हित नहीं देखा, अपने कंफर्ट जोन की चिंता नहीं की, वो तो बस देश की आजादी के लिए सब कुछ भूलकर अंग्रेजों से लड़ने चल पड़े थे। उस सफर में किसी को फांसी का फंदा मिला, किसी के शरीर को गोलियों से भून दिया गया, कोई यातनाएं सहते हुए जेल में ही गुजर गया, कईयों की जवानी जिंदगी जेल में खप गई।

हम देश के लिए मर नहीं पाए, लेकिन हम देश के लिए जरूर जी सकते हैं। मरना हमारे नसीब नहीं था, जीना हमारे नसीब है। पहले दिन से मेरा मन और मेरा मिशन एकदम क्लीयर रहा है। मैं स्वराज्य के लिए जीवन नहीं दे पाया, लेकिन मैंने तय किया सुराज और समृद्ध भारत के लिए जीवन समर्पित करूंगा। मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा रहा जिसमें मैं सालों–साल तक पूरे देश में घूमता रहा, भटकता रहा, जहां खाना मिला वहां खा लिया, जहां सोने को मिला, वहां सो लिया, समंदर के किनारे से लेकर पहाड़ों तक, रेगिस्तान से लेकर बर्फीली चोटियों तक, मैं हर क्षेत्र के लोगों से मिला, उनको जाना–समझा। मैंने अपने देश के जीवन, अपने देश की संस्कृति, अपने देश की चुनौतियों का फर्स्ट हैंड एक्सपीरियन्स लिया। वो भी एक वक्त था जब मैंने अपनी दिशा कुछ और तय की थी, लेकिन नियति ने मुझे राजनीति में पहुंचा दिया। कभी नहीं सोचा था कि एक दिन चीफ मिनिस्टर बनूंगा, और बना तो गुजरात का longest serving Chief Minister बन गया। 13 साल तक गुजरात का चीफ मिनिस्टर रहा, इसके बाद लोगों ने प्रमोशन देकर मुझे प्राइम मिनिस्टर बना दिया। लेकिन दशकों तक देश के कोने–कोने में जाकर मैंने जो सीखा है., उसी ने चाहे राज्य हो या केंद्र, मेरे सेवा के मॉडल को, मेरे गवर्नेंस के मॉडल को इतना सफल बनाया है। पिछले 10 साल में इस गवर्नेंस मॉडल की सफलता आपने देखी है, पूरी दुनिया ने देखी है, और अब देश के लोगों ने बहुत बड़े भरोसे के साथ मुझे ये तीसरा टर्म सौंपा है। इस थर्ड टर्म में, मैं तीन गुना ज्यादा दायित्व बोध के साथ आगे बढ़ रहा हूं।

हम देश के लिए मर नहीं पाए, लेकिन हम देश के लिए जरूर जी सकते हैं। मरना हमारे नसीब नहीं था, जीना हमारे नसीब है।

आज भारत, दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। भारत, Energy से भरा हुआ है, सपनों से भरा हुआ है। रोज़ नये कीर्तिमान, हर रोज़ नई ख़बर, आज ही एक औऱ बहुत अच्छी खबर मिली है। चेस ओलंपियाड में, मेन्स और वुमेन्स, दोनों में भारत को गोल्ड मिला है। लेकिन एक और बात बताऊं जब ज्यादा तालियां बजानी पड़ेगी। यह लगभग सौ साल के इतिहास में पहली बार हुआ है। पूरे देश को, हर हिंदुस्तानी को हमारे चेस प्लेयर्स पर बहुत गर्व है। एक और AI है, जो भारत को ड्राइव कर रही है, और वो कौन सा और है? वो है– ए फोर Aspirational (एस्पिरेशनल), आई फोर India, Aspirational India- ये नया फोर्स है, नई ऊर्जा है। आज करोड़ों भारतीयों की aspirations (एस्पिरेशन), भारत की ग्रोथ को ड्राइव कर रही हैं। हर एस्पीरेशन, नए अचीवमेंट को जन्म देती है। औऱ हर अचीवमेंट, नई एस्पिरेशन के लिए

खाद पानी बन रही है। एक दशक में भारत, 10वें नंबर से 5वें नंबर की इकॉनॉमी बन गया। अब हर भारतीय चाहता है कि भारत जल्दी से Third largest economy बने। आज देश के एक बहुत बड़े वर्ग की बेसिक नीड्स पूरी हो रही हैं। पिछले 10 साल में, करोड़ों लोगों को क्लीन कुकिंग गैस की सुविधा मिली है, उनके घर तक पाइप से साफ पानी पहुंचने लगा है, उनके घर में बिजली कनेक्शन पहुंचा है, उनके लिए करोड़ों टॉयलेट्स बने हैं। ऐसे करोड़ों लोग अब क्वालिटी लाइफ चाहते हैं।

अब भारत के लोगों को सिर्फ रोड नहीं, उन्हें शानदार एक्सप्रेसवे चाहिए। अब भारत के लोगों को सिर्फ रेल कनेक्टिविटी नहीं, उन्हें हाईस्पीड ट्रेन चाहिए। भारत के हर शहर की अपेक्षा है, उसके यहां मेट्रो चले, भारत के हर शहर की अपेक्षा है, उसका अपना एयरपोर्ट हो। देश का हर नागरिक, हर गांव–शहर चाहता है कि उसके यहां दुनिया की बेस्ट सुविधाएं हों। और इसका नतीजा हम देख रहे हैं। 2014 में भारत के सिर्फ 5 शहरों में मेट्रो थी, आज 23 शहरों में मेट्रो है। आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मेट्रो नेटवर्क भारत में है। और इसका हर दिन विस्तार हो रहा है।

2014 में भारत के सिर्फ 70 शहरों में एयरपोर्ट्स थे, आज 140 से ज्यादा शहरों में एयरपोर्ट्स हैं। 2014 में 100 से भी कम ग्राम पंचायतों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी थी, 100 से भी कम, आज 2 लाख से भी ज्यादा पंचायतों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी है। 2014 में भारत में 140 मिलियन यानि 14 करोड़ के आसपास LPG कंज्यूमर थे। आज भारत में 310 मिलियन यानि 31 करोड़ से ज्यादा LPG कंज्यूमर हैं। जिस काम में पहले सालों लग जाते थे, वो काम अब महीनों में खत्म हो रहा है। आज भारत के लोगों में एक आत्मविश्वास है, एक संकल्प है, मंजिल तक पहुंचने का इरादा है, भारत में डवलपमेंट, एक पीपल्स मूवमेंट बन रहा है। और हर भारतीय विकास के इस मूवमेंट में बराबर का पार्टनर बन गया है। उसे भरोसा हैभारत की सफलता पर, भारत की उपलब्धियों पर।

भारत आज, land of opportunities है, अवसरों की धरती है। अब भारत, अवसरों का इंतज़ार नहीं करता, अब भारत अवसरों का निर्माण करता है। बीते 10 साल में भारत ने हर सेक्टर में opportunities का एक नया launching pad तैयार किया है। आप देखिए सिर्फ एक दशक में ही, और ये बात आप सबको गर्व देगी, सिर्फ एक दशक में ही 25 करोड़ लोग, एक दशक में ही 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। ये कैसे हुआ? ये इसलिए हुआ, हमने पुरानी सोच बदली, अप्रोच बदली। हमने गरीब को Empower करने पर फोकस किया। 50 करोड़ यानि 500 मिलियन से ज्यादा लोगों को बैंकिंग सिस्टम से जोड़ा, 55 करोड़ यानि 550 मिलियन, से ज्यादा लोगों को 5 लाख रुपए तक का फ्री मेडिकल ट्रीटमेंट देना, 4 करोड़ यानि 40 मिलियन से ज्यादा फैमिलीज को पक्के घर देना, Collateral (कोलेटरल) तिमम सवंदे का सिस्टम बनाकर करोड़ों लोगों को ease of credit से जोड़ना, ऐसे अनेकों काम हुए, तब इतने लोगों ने, खुद ने गरीबी को हराया। और वो गरीबी से निकलकर के आज यही निओ–मिडिल क्लास, भारत के डवलपमेंट को तेज गति दे रहा है।

हमने women welfare के साथ ही women led (लेड) development पर फोकस किया है। सरकार ने जो करोड़ों घर बनवाए, उनकी रजिस्ट्री महिलाओं के नाम हुई। जो करोड़ों बैंक खाते खुले, उसमें से आधे से ज्यादा खाते महिलाओं के खुले। 10 साल में भारत की 10 करोड़ महिलाएं माइक्रो Entrepreneurship Scheme से जुड़ी हैं। मैं आपको एक और Example देता हूं। हम भारत में एग्रीकल्चर को टेक्नॉलॉजी के साथ जोड़ने में अनेक प्रयास कर रहे हैं। उसमें आज खेती में, किसानी मे भरपूर मात्रामें ड्रोन का उपयोग आज भारत में नजर आता है। शायद ड्रोन आपके लिए नई बात नहीं है। लेकिन नई बात ये है, इसकी जिम्मेदारी कौन समझता है पता है? ये Rural women के पास है। हम हजारों महिलाओं को ड्रोन पायलट्स बना रहे हैं। एग्रीकल्चर में टेक्नोलॉजी का ये बहुत बड़ा रेवॉल्यूशन गांव की महिलाएं लेकर आ रही हैं।

भारत, भारत अब रुकने वाला नहीं है, भारत अब थमने वाला नहीं है। भारत चाहता है, दुनिया में ज्यादा से ज्यादा डिवाइस मेड इन इंडिया चिप पर चलें। हमने सेमीकंडक्टर सेक्टर को भी भारत की तेज ग्रोथ का आधार बनाया है।

जो Areas पहले Neglected थे, वो आज देश की प्रायॉरिटी हैं। आज भारत जितना कनेक्टेड है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आप हैरान होंगे, आज भारत का 5G मार्केट, बताऊं, बुरा नहीं लगेगा ना? आज भारत का 5G मार्केट अमेरीका से भी बड़ा हो चुका है। और ये 2 साल के भीतर–भीतर हुआ है। अब तो भारत, मेड इन इंडिया, 6G पर काम कर रहा है। ये कैसे हुआ? ये इसलिए हुआ, क्योंकि हमने इस सेक्टर को आगे बढ़ाने के लिए policies बनाईं। हमने मेड इन इंडिया टेक्नॉलॉजी पर काम किया। हमने सस्ते डेटा पर, मोबाइल फोन मैन्युफेक्चरिंग पर फोकस किया। आज दुनिया का करीब–करीब हर बड़ा मोबाइल ब्रांड, मेड इन इंडिया है। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैनुफैक्चरर है। एक जमाना था मेरे आने से पहले जब हम Mobile Importer थे, आज हम Mobile Exporter बन गए हैं।

अब भारत पीछे नहीं चलता, अब भारत नई व्यवस्थाएं बनाता है, अब भारत नेतृत्व करता है। भारत ने digital public

infrastructure&DPI का नया कॉन्सेप्ट दुनिया को दिया है। DPI ने Equality को प्रमोट किया है, ये करप्शन को कम करने का भी बहुत बड़ा माध्यम बना है। भारत का UPI आज, पूरी दुनिया को आकर्षित कर रहा है। आपकी जेब में वॉलेट है, लेकिन भारत में लोगों की जेब के साथ ही फोन में वॉलेट है, ई–वॉलेट है। अनेक भारतीय अब अपने डॉक्यूमेंट्स, फिज़िकल फोल्डर्स में नहीं रखते, उनके पास डिजी लॉकर है। वो एयरपोर्ट में जाते हैं, तो डिजी यात्रा से सीमलेस ट्रैवल करते हैं। ये डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर,जॉब्स, इनोवेशन और इससे जुड़ी हर टेक्नॉलॉजी का लॉन्चिंग पैड बन गया है।

भारत, भारत अब रुकने वाला नहीं है, भारत अब थमने वाला नहीं है। भारत चाहता है, दुनिया में ज्यादा से ज्यादा डिवाइस मेड इन इंडिया चिप पर चलें। हमने सेमीकंडक्टर सेक्टर को भी भारत की तेज ग्रोथ का आधार बनाया है। पिछले साल जून में भारत ने सेमीकंडक्टर सेक्टर के लिए इंसेंटिव्स घोषित किए थे। इसके कुछ ही महीनों बाद माइक्रोन की पहली सेमीकंडक्टर यूनिट का शिलान्यास भी हो गया। अब तक भारत में ऐसी 5 यूनिट्स स्वीकृत हो चुकी है। वो दिन दूर नहीं जब आप मेड इन इंडिया चिप यहां अमेरिका में भी देखेंगे। ये छोटी सी चिप – विकसित भारत की उड़ान को नई ऊंचाई पर ले जाएगी, और ये मोदी की गारंटी है।

आज भारत में रिफॉर्म्स के लिए जो Conviction (कन्विक्शन), जो कमिटमेंट है, वो अभूतपूर्व है। हमारा ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन प्रोग्राम, इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। दुनिया की 17 परसेंट पॉपुलेशन होने के बावजूद, ग्लोबल कार्बन एमिशन में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ 4 परसेंट है। दुनिया को बर्बाद करने में हमारा कोई रोल नहीं है। पूरी दुनिया की तुलना में एक तरह से यानि कह सकते हैं ना के बराबर है। हम भी सिर्फ कार्बन फ्यूएल जलाकर अपनी ग्रोथ को सपोर्ट कर सकते थे। लेकिन हमने ग्रीन ट्रांजिशन का रास्ता चुना। प्रकृति प्रेम के हमारे संस्कारों ने हमें गाइड किया। इसलिए, हम सोलर, विंड, हाइड्रो, ग्रीन हाइड्रोजन और न्यूक्लियर एनर्जी पर इन्वेस्टमेंट कर रहे हैं। आप देखिए, भारत G20 का ऐसा देश है, जिसने Paris climate goals को सबसे पहले पूरा कर दिया। 2014 के बाद से भारत ने अपनी Solar Energy Installed Capacity को 30 गुना से ज्यादा बढ़ाया है। हम देश के हर घर को सोलर पावर होम बनाने में जुटे हैं। इसके लिए रूफटॉप सोलर का बहुत बड़ा मिशन हमने शुरु किया है। आज हमारे रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट Solarise (सोलराइस) हो रहे हैं। भारत, घरों से लेकर सड़कों तक Energy Efficient Lighting के रास्ते पर चल पड़ा है। इन सारे प्रयासों से भारत में बहुत बड़ी संख्या में Green Jobs पैदा हो रही हैं।

21वीं सदी का भारत, एजुकेशन, स्किल, रिसर्च और इनोवेशन के दम पर आगे बढ़ रहा है। आप सभी नालंदा यूनिवर्सिटी के नाम से परिचित हैं। कुछ समय पहले ही भारत की प्राचीन नालंदा यूनिवर्सिटी, नए अवतार में सामने आई है। आज सिर्फ यूनिवर्सिटी को ही नहीं बल्कि नालंदा स्पिरिट को भी रिवाइव कर रहा है। पूरी दुनिया के स्टूडेंट्स भारत आकर पढ़ें, हम इस तरह का आधुनिक इकोसिस्टम बना रहे हैं। बीते 10 साल में भारत में, ये भी जरा आप लोगों को याद रखने जैसी बात बताता हूं मैं। बीते 10 साल में, भारत में हर सप्ताह एक यूनिवर्सिटी बनी है। हर दिन दो नए कॉलेज बने हैं। हर दिन एक नई ITI की स्थापना हुई है। 10 साल में ट्रिपल आईटी की संख्या 9 से बढ़कर 25 हो चुकी है। IIMs की संख्या 13 से बढ़कर 21 हो चुकी है। AIIMs की संख्या, तीन गुना बढ़कर 22 हो चुकी है। 10 साल में मेडिकल कॉलेजों की संख्या भी लगभग दोगुनी हो चुकी है। टॉप ग्लोबल यूनिवर्सिटीज़ भी आज भारत आ रही हैं, भारत का नाम है। अभी तक दुनिया ने भारत के designers का दम देखा, अब दुनिया, design in India का जलवा देखेगी।

आज हमारी साझेदारी, पूरी दुनिया के साथ बढ़ रही है। पहले भारत, सबसे समान दूरी की नीति पर चलता था – Equal Distance- अब भारत, सबसे समान नज़दीकी की नीति पर चल रहा है। हम ग्लोबल साउथ की भी बुलंद आवाज बन रहे हैं। आपने देखा होगा, भारत की पहल पर G–20 समिट में अफ्रीकन यूनियन को स्थायी सदस्यता मिली। आज जब भारत ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर कुछ कहता है, तो दुनिया सुनती है। कुछ समय पहले जब मैंने कहा– This is not the era (एरा) of war…तो उसकी गंभीरता सबने समझी।

भारत के लिए शक्ति और सामर्थ्य का अर्थ है, भारत के लिए शक्ति और सामर्थ्य का अर्थ है- 'ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय'।

आज दुनिया में कहीं भी संकट आए, भारत first responder के रूप में सामने आता है। कोरोना के समय में हमने 150 से ज्यादा देशों को वैक्सीन और दवाइयां भेजी, कहीं भूकंप आए, कहीं सायक्लोन आए, कहीं गृहयुद्ध हो, हम मदद के लिए सबसे पहले पहुंचते हैं। यही हमारे पुरखों की सीख है, यही हमारे संस्कार हैं।

आज का भारत दुनिया में एक नए catalytic agent की तरह उभर रहा है। और इसका प्रभाव हर सेक्टर में दिखेगा। ग्लोबल ग्रोथ के प्रोसेस को तेज़ करने के लिए भारत का रोल अहम होगा, ग्लोबल पीस के प्रोसेस को तेज करने के लिए भारत का रोल अहम होगा, ग्लोबल क्लाइमेट एक्शन को स्पीड अप करने में भारत का रोल अहम होगा, ग्लोबल स्किल गैप को दूर करने में भारत का रोल अहम होगा, ग्लोबल

इनोवेशन्स को नई दिशा देने में भारत का रोल अहम होगा, ग्लोबल सप्लाई चेन में स्टेबिलिटी के लिए भारत की भूमिका अहम होगी।

भारत के लिए शक्ति और सामर्थ्य का अर्थ है, भारत के लिए शक्ति और सामर्थ्य का अर्थ है– **"ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय"**। यानि Knowledge is for sharing- Wealth is for caring- Power is for protecting- इसीलिए, भारत की प्राथमिकता दुनिया में अपना दबाव बढ़ाने की नहीं, अपना प्रभाव बढ़ाने की है। हम आग की तरह जलाने वाले नहीं, हम सूरज की किरण की तरह रोशनी देने वाले लोग हैं। हम विश्व पर अपना दबदबा नहीं चाहते। हम विश्व की समृद्धि में अपना सहयोग बढ़ाना चाहते हैं। योग को बढ़ावा देना हो, सुपरफूड मिलेट्स को बढ़ावा देना हो, मिशन लाइफ, यानि लाइफस्टाइल फॉर इनवायरन्मेंट का विजन हो, भारत, ळक्च सेंट्रिक ग्रोथ के साथ ही ह्यूमेन सेंट्रिक ग्रोथ को भी प्राथमिकता दे रहा है। मेरा आपसे भी आग्रह है, यहां मिशन लाइफ को ज्यादा से ज्यादा प्रमोट करिए। हम अपनी लाइफस्टाइल में थोड़े से बदलाव करके भी पर्यावरण की बहुत मदद कर सकते हैं। शायद आपने सुना होगा और हो सकता है आप में से कुछ लोगों ने initiative लिया भी हो, आजकल भारत, में एक पेड़ मां के नाम, अपनी मां को याद करते हुए एक पेड़ लगाना, मां जिंदा है तो साथ ले जाना, मां नहीं है तो तस्वीर ले जाना, एक पेड़ मां के नाम लगाने का अभियान आज देश के हर कोने में चल रहा है। और मैं चाहूंगा, आप सभी यहां भी ऐसा अभियान चलाएं। ये हमारी जन्मदाता मां और धरती मां, दोनों का यश बढ़ाएगा।

आज का भारत बड़े सपने देखता है, बड़े सपनों का पीछा करता है। अभी कुछ दिन पहले ही पेरिस ओलंपिक खत्म हुए हैं। अगले ओलंपिक्स का होस्ट, USA है। जल्द ही, आप भारत में भी ओलंपिक्स के साक्षी बनेंगे। हम 2036 के ओलंपिक्स की मेजबानी के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। स्पोर्ट्स हो, बिजनेस हो या फिर एंटरटेनमेंट, आज भारत बहुत बड़े आकर्षण का केंद्र है। आज IPL जैसी भारत की लीग्स, दुनिया की टॉप लीग्स में से एक है। भारत की फिल्में, ग्लोबली धूम मचा रही हैं। भारत आज ग्लोबल टूरिज्म में भी परचम लहरा रहा है। दुनिया के अलग–अलग देशों में भारत के त्योहार मनाने की होड़ है। मैं देख रहा हूं इन दिनों हर शहर में लोग नवरात्रि का गरबा सीख रहे हैं। ये भारत के प्रति उनका प्यार है।

आज हर देश भारत को ज्यादा से ज्यादा समझना चाहता है, जानना चाहता है। आपको एक और बात जानकर खुशी होगी। कल ही, अमेरिका ने हमारे करीब 300 पुराने जो शिलालेख और मूर्तियां थीं, जो कभी हिंदुस्तान से कोई चोरी कर गया होगा, कोई 1500 साल पुरानी, कोई 2000 साल पुरानी, 300 शिलालेख और मूर्तियां भारत को लौटाई हैं। अभी तक अमेरिका ऐसी लगभग 500 धरोहरें भारत को लौटा चुका है। ये कोई छोटी सी चीज लौटाने का विषय नहीं है। ये हमारी हज़ारों वर्षों की विरासत का सम्मान है। ये भारत का सम्मान है, और ये आपका भी सम्मान है। मैं अमेरिका की सरकार का इसके लिए बहुत आभारी हूं।

भारत और अमेरिका की पार्टनरशिप लगातार मजबूत हो रही है। हमारी पार्टनरशिप, Global Good के लिए है। हम हर क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहे हैं। और इसमें आपकी सहूलियत का भी ध्यान है। मैंने पिछले साल ये घोषणा की थी कि सिएटेल में हमारी सरकार एक नया Consulate (कौंसुलेट) खोलेगी। अब ये Consulate (कौंसुलेट) शुरू हो चुका है। मैंने दो और Consulates खोलने के लिए आपके सुझाव मांगे थे। मुझे आपको ये बताते हुए खुशी है कि आपके सुझावों के बाद, भारत ने बोस्टन और लॉस एंजल्स में दो नए consulates (कौंसुलेट) खोलने का निर्णय लिया है। मुझे यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन में Thiruvalluvar (थिरुवल्लुवर) Chair of Tamil studies को announce करने की भी खुशी है। इससे महान तमिल संत थिरुवल्लुवर का दर्शन, दुनिया तक पहुंचाने में और मदद मिलेगी।

आपका ये आयोजन वाकई शानदार रहा है। यहां जो कल्चरल प्रोग्राम हुआ, वो अद्भुत था। मुझे ये भी बताया गया है कि इस इवेंट के लिए हज़ारों लोग और भी आना चाहते थे। लेकिन वेन्यू छोटा पड़ गया। जिन साथियों से मैं यहां मिल नहीं पाया, उनसे मैं क्षमा चाहता हूं। उन सभी से अगली बार मुलाकात होगी, किसी और दिन, किसी और वेन्यू पर। लेकिन मैं जानता हूं, उत्साह ऐसा ही होगा, जोश ऐसा ही होगा, आप ऐसे ही, स्वस्थ रहें, समृद्ध रहें, भारत–अमेरिका दोस्ती को ऐसे ही मजबूत करते रहें, इसी कामना के साथ, आप सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद!

बहुमुखी सेवाकार्य : सेवा पखवाड़ा

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री एवं विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय जननेता आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने "सेवा पखावाड़ा" कार्यक्रम के तहत ब्लड डोनेशन कैंप एवं आदरणीय प्रधानमंत्री जी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव एवं केंद्रीय कार्यालय प्रभारी श्री अरुण सिंह, राष्ट्रीय महासचिव श्री दुष्यंत गौतम, पार्टी के राष्ट्रीय सचिव मनजिंदर सिंह सिरसा, भाजपा राष्ट्रीय मीडिया के प्रमुख एवं सांसद श्री अनिल बलूनी एवं सह–प्रमुख डॉ संजय मयूख सहित कई अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। ज्ञात हो को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन को भाजपा सेवा दिवस के रूप में मनाती है तथा उनके जन्मदिन से लेकर महात्मा गाँधी जी की जयंती तक भाजपा कार्यकर्ता 'सेवा पखवाड़ा' मनाते हैं। इस दौरान देश भर में भाजपा कार्यकर्ता रक्तदान देते हैं, स्वच्छता अभियान चलाते हैं, वृक्षारोपण अभियान चलाते हैं, झुग्गी बस्तियों में सेवा अभियान चलाते हैं तथा सेवा के कई अन्य कार्य किये जाते हैं।

भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ता ऐसे महान शख्सियत के जन्म दिवस को सेवा दिवस के रूप में मनाते हैं। भाजपा हर बार की तरह इस बार भी 17 सितंबर से लेकर महात्मा गांधी जी की जयंती 2 अक्टूबर तक 'सेवा पखवाड़ा' मना रही है। जिसके दौरान रक्तदान, बृक्षारोपण, झुग्गी बस्तियों की सफाई, स्वच्छता अभियान समेत कई तरह के सेवा कार्य किये जा रहे हैं।

श्री नड्डा ने संबोधित करते हुए कहा कि आज हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्म दिवस है। मैं अपनी ओर से और भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ता की ओर से आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को जन्मदिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं और उनके दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जन्म दिवस 17 सितंबर से लेकर महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर तक हर साल "सेवा पखवाड़ा" मनाती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने समर्पण के साथ देश के गांव, गरीब, वंचित, पीड़ित, दलित, आदिवासी, युवा, महिला और किसान की चिंता की और उनके जीवन स्तर उपर उठाने के लिए निरंतर काम किया है। प्रधानमंत्री जी ने देश के संकल्पों को सिद्धि में बदला है। भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ता ऐसे महान शख्सियत के जन्म दिवस को सेवा दिवस के रूप मे मनाते हैं। ये मेरी

कामना है कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी इसी तरह देश की सेवा के साथ मानवता की सेवा में लगे रहें और हमलोग उनके सेवा कार्यों में योगदान देकर उन्हें ताकत दें।

श्री नड्डा ने कहा कि आज विश्वकर्मा पूजा दिवस भी है और आज ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल के सौ दिन भी पूरे हुए हैं। इसलिए यह दिन बड़ा विशेष है। भारतीय जनता पार्टी सेवा पखवाड़ा के दौरान रक्तदान, वृक्षारोपण, मलिन बस्तियों की सफाई, स्वच्छता अभियान समेत सेवा भाव से कई तरह के अभियान चला रही है। मोदी 3.0 अर्थात आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल में तीव्र गति से काम हुए है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के सौ दिन पूरे होने के उपलक्ष्य में अगले चार–पांच दिनों तक मोदी सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के सौ दिनों की उपलब्धियों को मंत्रियों द्वारा जनता को बताया जाएगा। साथ ही, भारतीय जनता पार्टी मोदी 3.0 अर्थात माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल के कार्यों को जनता तक पहुंचाएगी।

आदरणीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि मोदी सरकार 3.0 में सौ दिन के अंदर ही प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीबों के लिए 3 करोड़ मकान बनाने की मंजूरी दी गयी। मंजूरी के साथ ही पक्के मकान बनाने का काम भी शुरू हो गया है। इसी प्रकार से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त भी जारी कर दी गई है। इस योजना के तहत किसानों के खाते में अबतक लगभग दो लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि पहुंच गयी है। सौ दिनों में मोदी सरकार ने यूनीफाइड पेंशन स्कीम की मंजूरी दे दी है। किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य की राशि बढ़ा दी गयी है। इस दौरान 15 नए वंदे भारत ट्रेन का परिचालन शुरू हो गए हैं। 8 नेशनल हाईस्पीड रोड कॉरिडोर बनाने की मंजूरी दी गयी है। 8 नए ब्रॉडगेज रेलवे लाइन की मंजूरी दी गयी है। 12 नए स्मार्ट सिटी बनाने की मंजूरी दी गयी है। साथ ही, इंफ्रास्ट्रक्चर को और बेहतर बनाने के लिए 3 लाख करोड़ रुपए के आवंटन को मंजूरी दी गयी है।

श्री नड्डा ने कहा कि समाज के सभी वर्गों से जुड़ी योजना प्रधानमंत्री आयुष्मान जन आरोग्य योजना के तहत अब देश के 70 साल से उपर के लोगों के लिए साल में पांच लाख रुपए तक की मुफ्त इलाज की सुविधा उपलब्ध करायी जाएगी, चाहे वह व्यक्ति किसी भी आमदनी और किसी भी सामाजिक वर्ग से संबंध रखता हो। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के चौथे चरण की मंजूरी दे दी गयी है। इसके तहत 25 हजार गांवों को सड़कों से जोड़ने के लिए लगभग 62,500 किलोमीटर ऑलवेदर ग्रामीण सड़कों को निर्माण होगा। प्रधानमंत्री जी के तीसरे कार्यकाल में ऐसे अनेक काम हुए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कार्यों का जिक्र मैंने किया है। ये सभी कार्य केवल 100 दिनों में हुए हैं। देश आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में "विकसित भारत" का संकल्प लेकर चल पड़ा है।

भाजपा आतंकवाद के पूर्णतया सफाये के लिए प्रतिबद्ध : शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने जम्मू–कश्मीर के पद्दर नागसेनी, किश्तवाड़ और रामबन की जनसभाओं में कांग्रेस ओर नेशनल कॉन्फ्रेंस आतंकवाद के पोषक और प्रदेश के विकास विरोधी बताते हुए जमकर आलोचना की और मोदी सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित किया। श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी जम्मू कश्मीर में गुर्जर, बकरवाल, पहाड़ी, दलित, ओबीसी को आरक्षण और महिलाओं को मिले अधिकारों को किसी को भी छीनने नहीं देगी। कार्यक्रम के दौरान मंच पर केंद्रीय मंत्री श्री जितेंद्र सिंह, पूर्व सांसद श्री जामयांग त्सेरिंग नामग्याल, श्री जानकी नाथ मनहास, श्री प्रदीप परिहार, भारतीय जनता पार्टी के विधानसभा प्रत्याशियों सहित पार्टी के अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

श्री शाह ने कहा कि नागसेनी की पवित्र भूमि ने कई वर्षों तक भारत को मजबूत रखने का साहस दिखाया है और बलिदान भी दिए हैं। नागसेनी के पूर्वजों के कारण यह भूमि तिरंगे से सुशोभित है। देश ने विभाजन और 90 के दशक में आतंकवाद का समय भी देखा है। चंद्रकांत शर्मा और परिहार बंधुओं ने देश के लिए कुर्बानियां दी। भाजपा की सरकार आतंकवाद को इतना नीचे दफन करेगी कि वो कभी बाहर नहीं आ पाएगा। प्रदेश में अभी भी 1990 की तरह आतंकवाद को मजबूत करने के प्रयास हो रहे हैं। कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस ने वादा किया है कि अगर उनकी सरकार बनी तो आतंकियों को छोड़ दिया जाएगा। मगर देश में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार है, इसीलिए भारत की धरती पर आतंकवाद को बढ़ावा देने का साहस किसी में नहीं है।

कांग्रेस-एनसी पाकिस्तान से बात और एलओसी ट्रेड दोबारा शुरू करना चाहती है। लेकिन जब तक जम्मू कश्मीर से आतंकवाद खत्म नहीं होता, तब तक पाकिस्तान से कोई बातचीत नहीं की जाएगी।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार ने वीडीजी और एसपीओ के कंधों को मजबूत करने का कार्य किया है। सुरक्षाबलों को 303 की पुरानी और भारी राइफलों की जगह, आधुनिक एसएलआर से लैस किया जा रहा है। भाजपा सरकार एक ऐसी सुरक्षा ग्रिड का निर्माण कर रही है, जिससे सेना और जवान कितने भी आतंकियों का खात्मा पहाड़ों में ही कर सकेंगे। जिनके मंसूबे है आतंकवाद के हैं, वो वापस चले जाएं, वरना भारतीय सेना और भारतीय सुरक्षाबल यही उनका ठिकाना बना देगी। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू कश्मीर में लोकतंत्र को मजबूत करने का काम किया है। फारूख अब्दुल्ला की तीन पुश्तों ने जम्मू कश्मीर में राज किया है, लेकिन यहां की जनता को कई मूलभूत सुविधा से वंचित रखा। कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस एलओसी ट्रेड को दोबारा शुरू करना चाहते हैं। जब तक जम्मू कश्मीर से आतंकवाद खत्म नहीं होता, तब तक पाकिस्तान से कोई बातचीत नहीं की जाएगी।

श्री शाह ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव 2 ताकतों के बीच में है, जिसमें एक ओर नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस है व दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी है। कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 35 वर्षों तक जम्मू कश्मीर को आतंकवाद की आग में झोंक दिया, जिसमें 40 हजार से ज्यादा लोग शहीद हो गए। क्या राहुल गांधी और फारुख अब्दुल्ला इन मौतों की जिम्मेदारी लेंगे? जम्मू कश्मीर में भाजपा की सरकार बनने के बाद, एक श्वेत पत्र लाकर, इन 40 हजार लोगों की मृत्यु पर इन लोगों की जिम्मेदारी तय करेगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस ने वादा किया है कि अगर वे लोग सत्ता में आए तो धारा 370 को वापस लाएंगे। अगर धारा 370 अब तक बहाल होती, तो गुर्जर और पहाड़ी लोगों को आरक्षण नहीं मिल पाता। प्रदेश के लोगों को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, न फारुख अब्दुल्ला की सरकार बन रही है और न ही राहुल गांधी की। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जम्मू कश्मीर से धारा 370 को उखाड़ फेंका गया है और अब धारा

370 केवल इतिहास का पन्ना बनकर रह गई है, अब भारत के संविधान में धारा 370 के लिए कोई स्थान नही है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि ये जम्मू कश्मीर की भूमि पंडित प्रेमनाथ डोगरा की भूमि है, अब जम्मू कश्मीर में दो प्रधान, दो विधान और दो झंडे कभी नहीं हो सकते। भारत में केवल एक ही झंडा होगा, हमारा तिरंगा। विपक्षी नेता कह रहे हैं कि उनकी सरकार आती है, तो आरक्षण पर पुनर्विचार करेंगे, जम्मू और कश्मीर की जनता उनके झांसे में मत आए, क्योंकि अगर उनकी सरकार आएगी तो वो आपके आरक्षण को खत्म कर देंगे। जब पहाड़ियों को आरक्षण देने की बात आई तो गुर्जर भाइयों को उकसाया गया कि उनके हिस्से से आरक्षण काटेंगे, लेकिन भाजपा ने गुर्जर समुदाय से वादा किया था कि पहाड़ियों को आरक्षण मिलेगा और वो भी गुर्जरों के आरक्षण को छेड़े बिना। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने गुर्जरों के आरक्षण को जस का तस रखकर पहाड़ियों को आरक्षण देने का काम किया है। पहाड़ पर रहने वाले अभिभावकों के बच्चे शिक्षा से वंचित रहते थे, वो दिन अब बीत गए हैं, अब पहाड़ के दूर दराज के छोर पर रहने वाले अभिभावकों के बच्चों के पास ट्राइबल रिजर्वेशन है और अब उनके बच्चे भी डीएसपी और बड़े अधिकारी बनकर देश के अलग–अलग हिस्सों में काम कर सकेंगे।

श्री शाह ने कहा कि विपक्ष ने यह सिद्ध किया है कि वे अपने परिवार के लिए सरकार चला सकते हैं, जबकि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तीन परिवारों द्वारा शासन की परंपरा को समाप्त कर पंचायती राज की स्थापना की है। ब्लॉक पंचायत, ग्राम पंचायत और जिला स्तर पर चुनाव सम्पन्न कराया है, जिससे स्थानीय युवाओं में से कई युवा नेता उभरे हैं। ये युवा नेता जल्द ही विधानसभा और लोकसभा में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भी करेंगे। जहां विपक्ष जम्मू–कश्मीर को आतंकवाद प्रभावित राज्य बनाना चाहता है, वहीं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का लक्ष्य इसे एक विकसित क्षेत्र बनाने का है। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू कश्मीर के विकास, युवाओं के भविष्य और गुर्जर, बकरवाल और पहाड़ियों सहित राज्य की महिलाओं के अधिकारों का कत्ल किया है। मगर भाजपा न केवल महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित करने में विश्वास करती है, बल्कि गुर्जर, पहाड़ी, दलित और ओबीसी समुदायों को आरक्षण के अधिकारों को सुनिश्चित करने में विश्वास रखती है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने बताया कि अगर जनता इस क्षेत्र से हमारे विधायक प्रत्याशी को विजयी बनती है, तो क्षेत्र के विकास कार्य दोगुनी रफ्तार से होंगे एवं भाजपा को जनादेश मिला तो भाजपा वीडीसी–एसपीओ को मजबूत करेगी एवं जम्मू कश्मीर से आतंकवाद को जड़ से खत्म करने का काम करेगी। इसके अलावा, जन सहयोग से भ्रष्टाचार के कारण लंबे समय से बंद नीलम खदानों को पुनः खोला जाएगा, जिससे राज्य सरकार की भी आय में वृद्धि होगी और पद्दार के युवाओं को रोजगार के भी नए अवसर मिलेंगे, पदम–दारचा रोड भी बनेगा और साथ में लद्दाख में भी विकास होगा। टूरिज़्म को बढ़ाने के लिए जम्मू क्षेत्र में कभी

काम नहीं किया गया, मगर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद पुंछ और रजौरी में, पहलगाम से भी अच्छा टूरिस्ट स्पॉट विकसित किया जाएगा। तवी नदी पर रिवरफ़्रंट विकसित किया जाएगा। भाजपा की सरकार बनते ही करथई के हाइड्रो प्रोजेक्ट को 3 महीने के भीतर ही पूरा कर लिया जाएगा।

श्री शाह ने कहा कि भाजपा सरकार ने पैरा मिलिट्री फोर्स के भीतर 3 प्रकार का आरक्षण दिया है। मोदी सरकार ने एससी–एसटी और पहाड़ी क्षेत्रों से आने वाले लोगों के लिए भी आरक्षण का प्रावधान दिया या है। प्रदेश के गुर्जर और पहाड़ी लोगों को पैरा मिलिट्री फोर्स में शामिल किया जाएगा। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस फिर से 2 झंडे, 2 दरबान और 2 संविधान लाना चाहती है। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का गठबंधन हमेशा से आतंकवाद का पोषक रहा है और इस गठबंधन ने लोकतंत्र का गल घोंटने का काम किया है। अब्दुल्ला और कांग्रेस पार्टी का रिश्ता तीन पीढ़ियों का है, कभी इंदिरा गांधी, शेख अब्दुल्ला को जेल में डाल दिया करती थी, कभी बाहर निकलवा देती थीं। तब राजीव गांधी अब्दुल्ला से समझौते करते थे और अब राहुल गांधी, उमर अब्दुल्ला से समझौता करते है। 1990 के दशक में जब फारुख अब्दुल्ला, राजीव गांधी के साथ गठबंधन कर मुख्यमंत्री बने थे, जब पूरी कश्मीर घाटी आतंकवाद के कारण खून में लथपथ थी, तब फारुख अब्दुल्ला लंदन में गर्मियों की छुट्टी पर चले गए थे।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि नेहरू, गांधी और अब्दुल्ला परिवारों ने हमेशा प्रदेश में आतंक को बढ़ावा दिया और आज फिर लोगों का समर्थन मांग रहे हैं। इन परिवारों ने महाराजा हरि सिंह का अपमान किया और उनकी मृत्यु तक उन्हें वापस आने नहीं दिया। महाराजा हरि सिंह के पुत्र करण सिंह ने अपने युवा दिनों में कहा था कि 'मेरे पिताजी को जम्मू–कश्मीर से निकाल दिया गया, वापस आने नहीं दिया गया। केवल उनकी अस्थियां ही वापस आ पाईं।' नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस ने महाराजा हरि सिंह का अपमान किया, कश्मीरी पंडितों को बेदखल किया, आतंकवाद फैलाया, आरक्षण को रोके रखा और महिलाओं के अधिकारों को छीनने का काम किया। धारा 370 के लाभार्थी जम्मू कश्मीर के लोग नहीं, बल्कि केवल तीन परिवार हैं। अब्दुल्ला परिवार, गांधी परिवार और मुफ्ती परिवार। उमर अब्दुल्ला ने पहले कहा कि चुनाव नहीं लड़ेंगे, फिर सुरक्षित सीट ढूँढी और फिर 2 सीटों पर पर्चा भर दिया। उमर अब्दुल्ला कितनी भी सीटों से चुनाव लड़ लें, उनकी हार निश्चित है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के एक प्रत्याशी ने कहा है कि 4 तारीख के बाद हमारा हिसाब करेंगे, वो ठिकाना बता दें, हम उपस्थित हो जाएंगे।

श्री शाह ने कहा कि चुनाव जीतने के लिए फारूख अब्दुल्ला इस हद तक गिर गए हैं कि जिस भारतीय सेना ने तीन–तीन युद्धों में अपने सीने पर गोलियां खाई, जम्मू कश्मीर की जनता के लिए सुरक्षा कवच बनी, फारूख अब्दुल्ला उस सेना का अपमान करने का काम कर रहे है। माँ भारती की रक्षा करने वाले भारतीय सेना पर आरोप लगाते है कि आतंकवादियों के साथ मिले हुए है। कांग्रेस की सरकार ने देशद्रोह के मामले में शेख अब्दुल्ला को जेल में डाला था और जम्मू कश्मीर की विधानसभा में शेख अब्दुल्ला और अब्दुल्ला परिवार के खिलाफ श्वेत पत्र भी लाई थी। अगर राहुल गांधी के अंदर हिम्मत है तो उस श्वेत पत्र की बात करके दिखाएं। जिस कांग्रेस पार्टी ने इस अब्दुल्ला परिवार को देशद्रोही कहा, आतंकवाद के लिए जिम्मेदार ठहराया, उमर अब्दुल्ला के दादा को वर्षों तक जेल में रखा। आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सामने जीतने के लिए राहुल और अब्दुल्ला एक दूसरे के गले लगकर चुनाव लड़ रहे हैं।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि उमर अब्दुल्ला और राहुल गांधी अफजल गुरु के फांसी के खिलाफ थे, जो ये दर्शाता है कि अगर इनकी सरकार बनी, तो जम्मू–कश्मीर में फिर से पथराव होगा, आतंकवादियों के जनाज़े निकलेंगे, घाटी में गोलियां चलेंगी, सिनेमा हॉल पर ताले लग जाएंगे, अमरनाथ यात्रा पर हमले होंगे, ताजिया के जुलूस पर प्रतिबंध लग जाएगा। जम्मू कश्मीर में जो अब निवेश हो रहा है, वो भी बंद हो जाएगा और बेरोजगारी का संकट खड़ा हो जाएगा। चुनाव जीतने के लिए कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस को आतंक के शरण में जाने पर भी कोई परहेज नहीं है। कांग्रेस सरकार के पूर्व गृह मंत्री ने कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री रहते हुए उन्हें कश्मीर के लाल चौक आने में डर लगता था। मगर भाजपा सरकार के शासन में आज कोई भी कश्मीर और लाल चौक पर आकर सैर कर सकता है। आज कश्मीर में राहुल गांधी अपनी पैदल यात्रा निकलते हैं, प्रियंका गांधी और राहुल गांधी बर्फ के गोले बनाकर खेलते हैं, राहुल गांधी बाइक चलाते हैं, आइस क्रीम खाते हैं और लाल

चौक पर तिरंगे को फहरता देख माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को गाली देते हैं।

श्री शाह ने कहा कि वे दिन चले गए जब विपक्ष पहाड़ी समुदायों को डराता–धमकाता था या फिर गुर्जरों पर रिश्वत लेने का आरोप लगाता था। अब कोई उन्हें डरा नहीं सकता और न ही उनका अपमान कर सकता है और बदले की भावना से भाषण देने की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी। उन्होंने कांग्रेस और राहुल गांधी की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि वे जम्मू–कश्मीर को फिर से आतंकवाद की आग में झोंकना चाहते हैं। इस बीच, भाजपा ने बड़े–बड़े वादे किए बिना ही महत्वपूर्ण विकास कार्य किए हैं। मोदी सरकार ने पैडर में सरकारी डिग्री कॉलेज, एक आईटीआई, तीन उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संस्थान स्थापित किए। पैडर में एक जिला अस्पताल बनाया और पैडर को लद्दाख के जांस्कर से जोड़ने वाली सड़क बनाने का फैसला किया। जम्मू–कश्मीर में भाजपा की सरकार बनने के बाद मचैल माता यात्रा स्थल का राज्य सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर विकास किया जाएगा, भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने पर ध्यान दिया जाएगा, जलविद्युत परियोजनाएं विकसित की जाएंगी और पद्दार तथा किश्तवाड़ में पहले इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। साथ ही सुरक्षा बलों और स्थानीय लोगों के बीच संपर्क सुनिश्चित करने के लिए 130 नए टावर स्थापित किए जाएंगे। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पैडर में पहला डिग्री कॉलेज स्थापित किया और अब किश्तवाड़ में पहला हवाई अड्डा भी बनने वाला है। माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने हर गाँव को सड़क से जोड़ने का काम किया है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की कैबिनेट ने यह प्रस्ताव किया है कि 100 या उससे कम आबादी वाले क्षेत्रों को सड़कों से जोड़ा जाएगा, जिससे किश्तवाड़ के क्षेत्र को सबसे ज्यादा लाभ होगा। नाशपाती को जीआई टैग देने की भी योजना है और रिवर राफ्टिंग तथा साहसिक पर्यटन प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किए जाएंगे। भारतीय जनता पार्टी ने अपने संकल्प पत्र के माध्यम से यह वादा किया है कि 'माँ सम्मान योजना' के माध्यम से हर घर की सबसे बुजुर्ग महिला को प्रति वर्ष रू018,000 प्रदान किए जाएंगे, दो निःशुल्क उज्ज्वला गैस प्रदान किए जाएंगे, एक दिवाली के दौरान और दूसरा रक्षाबंधन पर। छोटे किसानों को भी पीएम किसान सम्मान निधि के तहत सालाना रू0 10,000 प्रदान किए जाएंगे, बिजली बिलों में 50रू0 की कमी की जाएगी और जम्मू–कश्मीर में मेट्रो सेवाओं की शुरुआत की जाएगी। योजनाओं में 100 खंडहर मंदिरों का जीर्णोद्धार, जम्मू में तवी रिवरफ्रंट की स्थापना और रंजीत सागर जलाशय में जल क्रीड़ा केंद्र की स्थापना भी शामिल है। जिन लोगों को नुकसान हुआ है, उनके पुनर्वास पर काम किया जाएगा। किश्तवाड़ और डोडा में आयुष हर्बल पार्क बनाए जाएंगे, जम्मू में एक आईटी हब बनाया जाएगा, उधमपुर में एक फार्मास्युटिकल हब बनाया जाएगा और जम्मू संभाग के लिए क्षेत्रीय विकास बोर्ड बनाए जाएंगे। अटल आवास योजना के माध्यम से पीएम आवास के लिए पांच मरला मुफ़्त जमीन उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही एससी और एसटी पहाड़ी और गुर्जर समुदायों को नौकरी में पदोन्नति में आरक्षण मिलेगा। भाजपा सरकार ने जम्मू–कश्मीर में 2 एम्स, 2 आईआईएम, फेशन डिजाइन का स्कूल, 9 मेडिकल कॉलेज, इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट के कार्य के साथ प्रदेश के लोगों को 24 घंटे बिजली पहुंचाने का भी काम किया है। पिछले 10 वर्षों में चेनानी–नासिरी टनल और बनिहाल–कांजीघुट टनल का निर्माण हुआ है। रामबन को 4 लेन राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ा गया। संगलदान में रेलवे स्टेशन बनाने की शुरुआत की गई और पहली इलेक्ट्रिक ट्रेन की शुरुआत की गई। रामबन में नए बस स्टेंड और 3 उच्चस्तरीय विद्यालयों का निर्माण किया गया, सुलई शहद को जीआई टैग दिया गया और सावल्कोट जल विद्युत परियोजना का कार्य चल रहा है, जिससे 1850 मेगावाट बिजली की आपूर्ति की जाएगी।

श्री शाह ने कहा कि घाटी हो या जम्मू, पहाड़ हो या मैदान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू कश्मीर की जनता के लिए 5 लाख तक की स्वास्थ्य सुविधा सुनिश्चित प्रदान किया है और अब इस योजना में 70 वर्ष से अधिक उम्र के हर वर्ग के लोगों को भी शामिल कर लिया गया है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू–कश्मीर में हर घर में 5 किलो चावल मुफ़्त प्रदान किया और हर घर में नल से जल पहुंचाया है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूरे देश को विकास के पथ पर अग्रसर किया है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'सबका साथ, सबका विकास' के सूत्र पर आगे बढ़ रहे हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लैपटॉप और तिरंगे को हाथ में लेने वालों के लिए नौकरियों की व्यवस्था की है और जिनके हाथों में बंदूक होंगी, उनके लिए जेल की सलाखें भी तैयार रखी है। भाजपा एक बार फिर वादा करती है कि इस क्षेत्र में आतंकवाद को बढ़ावा देने की कोई हिम्मत नहीं करेगा। भाजपा आतंकवाद को पूर्णरूप से खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। श्री शाह ने कहा कि चुनाव के लिए मतदान बहुत जरूरी है और इस क्षेत्र में कठिन परिस्थितियों के बावजूद सभी लोगों से मतदान करने और कमल के निशान पर वोट देने का आह्वान किया।

एक देश : एक चुनाव

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में लगभग वर्ष भर किसी न किसी क्षेत्र में कोई चुनाव चलता रहता है। प्रशासनिक तंत्र, आचारसंहिता के कारण विकास की गति कही न कही प्रभावित दिखती है। ऐसे में चुनाव प्रक्रिया किसी प्रकार की हो जिसके कारण विकास बाधित न हो। लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराये जाने के मसले पर लंबे समय से बहस चल रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी इस विचार का समर्थन कर इसे आगे बढ़ाया है। इस मसले पर चुनाव आयोग, नीति आयोग, विधि आयोग और संविधान समीक्षा आयोग विचार कर चुके हैं। विधि आयोग ने देश में एक साथ चुनाव कराये जाने के मुद्दे पर विभिन्न राजनीतिक दलों, क्षेत्रीय पार्टियों और प्रशासनिक अधिकारियों की राय जानने के लिये तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया था। इस कॉन्फ्रेंस में कुछ राजनीतिक दलों ने इस विचार से सहमति जताई, जबकि कई राजनीतिक दलों ने इसका विरोध किया।

एक देश एक चुनाव की अवश्यकता

किसी भी जीवंत लोकतंत्र में चुनाव एक अनिवार्य प्रक्रिया है। स्वस्थ एवं निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र की आधारशिला होते हैं। भारत जैसे विशाल देश में निर्बाध रूप से निष्पक्ष चुनाव कराना हमेशा से एक चुनौती रहा है। अगर हम देश में होने चुनावों पर नजर डालें तो पाते हैं कि हर वर्ष किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं। चुनावों की इस निरंतरता के कारण देश हमेशा चुनावी मोड में रहता है। इससे न केवल प्रशासनिक और नीतिगत निर्णय प्रभावित होते हैं बल्कि देश के खजाने पर भारी बोझ भी पड़ता है। इस सबसे बचने के लिये नीति निर्माताओं ने लोकसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ कराने का विचार बनाया। देश में इनके अलावा पंचायत और नगरपालिकाओं के चुनाव भी होते हैं किन्तु एक देश एक चुनाव में इन्हें शामिल नहीं किया जाता।

एक देश एक चुनाव लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ करवाने एक वैचारिक उपक्रम है। यह देश के लिये कितना सही होगा और कितना गलत, इस पर कभी खत्म न होने वाली बहस की जा सकती है। लेकिन इस विचार को धरातल पर लाने के लिये इसकी विशेषताओं की जानकारी होना जरूरी है।

एक देश एक चुनाव कोई अनूठा प्रयोग नहीं है, क्योंकि 1952, 1957, 1962, 1967 में ऐसा हो चुका है, जब लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव साथ–साथ करवाए गए थे। यह क्रम तब टूटा जब 1968–69 में कुछ राज्यों की विधानसभाएँ विभिन्न कारणों से समय से पहले भंग कर दी गई। आपको बता दें कि 1971 में लोकसभा चुनाव भी समय से पहले हो गए थे। जाहिर है जब इस प्रकार चुनाव पहले भी करवाए जा चुके हैं तो अब करवाने में क्या समस्या है।

एक तरफ जहाँ कुछ जानकारों का मानना है कि अब देश की जनसंख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है, लिहाजा एक साथ चुनाव करा पाना संभव नहीं है, तो वहीं दूसरी तरफ कुछ विश्लेषक कहते हैं कि अगर देश की जनसंख्या बढ़ी है तो तकनीक और अन्य संसाधनों का भी विकास हुआ है।

एक देश एक चुनाव यह विकासोन्मुखी विचार है। चुनावों के कारण देश में बार–बार आदर्श आचार संहिता लागू करनी पड़ती हैद्य इसकी वजह से सरकार आवश्यक नीतिगत निर्णय नहीं ले पाती और विभिन्न योजनाओं को लागू करने समस्या आती है। इसके कारण विकास कार्य प्रभावित होते हैं। निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव अधिसूचना जारी करने के बाद सत्ताधारी दल के द्वारा किसी परियोजना की घोषणा, नई स्कीमों की शुरुआत या वित्तीय मंजूरी और नियुक्ति प्रक्रिया की मनाही रहती है। इसके पीछे निहित उद्देश्य यह है कि सत्ताधारी दल को चुनाव में अतिरिक्त लाभ न मिल सके। इसलिए यदि देश में एक ही बार में लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव कराया जाए तो आदर्श आचार संहिता कुछ ही समय तक लागू रहेगी, और इसके बाद विकास कार्यों को निर्बाध पूरा किया जा सकेगा।

एक देश एक चुनाव से बार–बार चुनावों में होने वाले भारी खर्च में कमी आएगी। गौरतलब है कि बार–बार चुनाव होते रहने से सरकारी खजाने पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है। चुनाव पर होने वाले खर्च में लगातार हो रही वृद्धि इस बात का सबूत है कि यह देश की आर्थिक सेहत के लिये ठीक नहीं है।

एक देश एक चुनाव इससे काले धन और भ्रष्टाचार पर रोक लगाने में मदद मिलेगी। यह किसी से छिपा नहीं है कि चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों द्वारा काले धन का खुलकर इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि देश में प्रत्याशियों द्वारा चुनावों में किये जाने वाले खर्च की सीमा निर्धारित की गई है, किन्तु राजनीतिक दलों द्वारा किये जाने वाले खर्च की कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है। कुछ विश्लेषक यह मानते हैं कि लगातार चुनाव होते रहने से राजनेताओं और पार्टियों को सामजिक समरसता भंग करने का मौका मिल जाता है जाता है,जिसकी वजह से अनावश्यक तनाव की परिस्थितियां बन जाती हैंद्य एक साथ चुनाव कराये जाने से इस प्रकार की समस्याओं से निजात पाई जा सकती है। एक साथ चुनाव कराने से सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षा बलों को बार–बार चुनावी ड्यूटी पर लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे उनका समय तो बचेगा ही और वे अपने कर्त्तव्यों का पालन भी सही तरीके से कर पायेंगे। हमारे यहाँ चुनाव कराने के लिये शिक्षकों और सरकारी नौकरी करने वाले कर्मचारियों की सेवाएं ली जाती हैं, जिससे उनका कार्य प्रभावित होता है। इतना ही नहीं, निर्बाध चुनाव कराने के लिये भारी संख्या में पुलिस और सुरक्षा बलों की तैइसके अलावा बार–बार होने वाले चुनावों से आम जन–जीवन भी प्रभावित होता है।

एक देश एक चुनाव यह विकासोन्मुखी विचार है। चुनावों के कारण देश में बार-बार आदर्श आचार संहिता लागू करनी पड़ती है। इसकी वजह से सरकार आवश्यक नीतिगत निर्णय नहीं ले पाती और विभिन्न योजनाओं को लागू करने समस्या आती है। इसके कारण विकास कार्य प्रभावित होते हैं।

एक देश एक चुनाव का विरोध क्यों?

एक देश एक चुनाव के विरोध– विश्लेषकों का मानना है कि संविधान ने हमें संसदीय मॉडल प्रदान किया है जिसके तहत लोकसभा और विधानसभाएँ पाँच वर्षों के लिये चुनी जाती हैं, लेकिन एक साथ चुनाव कराने के मुद्दे पर हमारा संविधान मौन है। संविधान में कई ऐसे प्रावधान हैं जो इस विचार के बिल्कुल विपरीत दिखाई देते हैं। मसलन अनुच्छेद 2 के तहत संसद द्वारा किसी नये राज्य को भारतीय संघ में शामिल किया जा सकता है और अनुच्छेद 3 के तहत संसद कोई नया राज्य राज्य बना सकती है, जहाँ अलग से चुनाव कराने पड़ सकते हैं।

इसी प्रकार अनुच्छेद 85(2)(ख) के अनुसार राष्ट्रपति लोकसभा को और अनुच्छेद 174(2)(ख) के अनुसार राज्यपाल विधानसभा को पाँच वर्ष से पहले भी भंग कर सकते हैं। अनुच्छेद 352 के तहत युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में राष्ट्रीय आपातकाल लगाकर लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है। इसी तरह अनुच्छेद 356 के तहत राज्यों में राष्ट्रपति शासन लगाया जा सकता है और ऐसी स्थिति में संबंधित राज्य के राजनीतिक समीकरण में अप्रत्याशित उलटफेर होने से वहाँ फिर से चुनाव की संभावना बढ़ जाती है। ये सारी परिस्थितियाँ एक देश एक चुनाव के नितांत विपरीत हैं।

विचार देश के संघीय ढाँचे के विपरीत होगा और संसदीय लोकतंत्र के लिये घातक कदम होगा। लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ करवाने पर कुछ विधानसभाओं के मर्जी के खिलाफ उनके कार्यकाल को बढ़ाया या घटाया जायेगा जिससे राज्यों की स्वायत्तता प्रभावित हो सकती है। भारत का संघीय ढाँचा संसदीय शासन प्रणाली से प्रेरित है और संसदीय शासन प्रणाली में चुनावों की बारंबारता एक अकाट्य सच्चाई है।

एक देश एक चुनाव के विरोध में तीसरा तर्क यह है कि अगर लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ करवाए गए तो ज्यादा संभावना है कि राष्ट्रीय मुद्दों के सामने क्षेत्रीय मुद्दे गौण हो जाएँ या इसके विपरीत क्षेत्रीय मुद्दों के सामने राष्ट्रीय मुद्दे अपना अस्तित्व खो दें। लोकसभा के चुनाव जहाँ राष्ट्रीय सरकार के गठन के लिये होते हैं, वहीं विधानसभा के चुनाव राज्य सरकार का गठन करने के लिये होते हैं। इसलिए लोकसभा में जहाँ राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों को प्रमुखता दी जाती है, तो वहीं विधानसभा चुनावों में क्षेत्रीय महत्त्व के मुद्दे आगे रहते हैं।

इसके विरोध में चौथा तर्क यह है कि लोकतंत्र को जनता का शासन कहा जाता है। देश में संसदीय प्रणाली होने के नाते अलग–अलग समय पर चुनाव होते रहते हैं और जनप्रतिनिधियों को जनता के प्रति लगातार जवाबदेह बने रहना पड़ता है। इसके अलावा कोई भी पार्टी या नेता एक चुनाव जीतने के बाद निरंकुश होकर काम नहीं कर सकता क्योंकि उसे छोटे–छोटे अंतरालों पर किसी न किसी चुनाव का सामना करना पड़ता है। विश्लेषकों का मानना है कि अगर दोनों चुनाव एक साथ कराये जाते हैं, तो ऐसा होने की आशंका बढ़ जाएगी।

किन्तु राजनीतिक पार्टियों द्वारा जिस तरह से इसका विरोध किया जा रहा है उससे लगता है कि इसे निकट भविष्य लागू कर पाना संभव नहीं है। इसमें कोई दो राय नहीं कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत हर समय चुनावी चक्रव्यूह में घिरा हुआ नजर आता है। चुनावों के इस चक्रव्यूह से देश को निकालने के लिये एक व्यापक चुनाव सुधार अभियान चलाने की आवश्यकता है। इसके तहत जनप्रतिनिधित्व कानून में सुधार, कालेधन पर रोक, राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण पर रोक, लोगों में राजनीतिक जागरूकता पैदा करना शामिल है जिससे समावेशी लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।

यदि देश में 'एक देश एक कर' यानी ळैज लागू हो सकता है तो एक देश एक चुनाव क्यों नहीं हो सकता? अब समय आ गया है कि सभी राजनीतिक दल खुले मन से इस मुद्दे पर बहस करें ताकि इसे अमलीजामा पहनाया जा सके।

राजनीति में असभ्य अपशब्दों का प्रयोग?

आदरणीय खड़गे जी, आपने राजनीतिक मजबूरीवश जनता द्वारा बार–बार नकारे गए अपने failed product को एक बार फिर से polish कर बाजार में उतारने के प्रयास में जो पत्र देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को लिखा है, उस पत्र को पढ़ कर मुझे लगा कि आपके द्वारा कही गई बातें यथार्थ और सत्य से कोसों दूर हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पत्र में आप राहुल गाँधी सहित अपने नेताओं की करतूतों को या तो भूल गए हैं या उसे जनबूझ कर नजर अंदाज किया है, इसलिए मुझे लगा कि उन बातों को विस्तार से आपके संज्ञान में लाना जरूरी है।

खड़गे जी, चूंकि आपने अपने पत्र में selective तरीके से बात केवल राहुल गाँधी को लेकर की, इसलिए मैं उसी से अपनी बात की शुरूआत करना चाहूंगा। जिस व्यक्ति का इतिहास ही देश के प्रधानमंत्री सहित पूरे ओबीसी समुदाय को चोर कहकर गाली देने का रहा हो, देश के प्रधानमंत्री के लिए अत्यंत अमर्यादित शब्दों का प्रयोग करने का रहा हो, जिसने संसद में देश के प्रधानमंत्री को डंडे से पीटने की बात कही हो, जिसकी धृश्ट मानसिकता से पूरा देश वाकिफ हो, उस राहुल गाँधी को सही ठहराने की कोशिश आप किस मजबूरी के चलते कर रहे हैं?

Jagat Prakash Nadda
National President

Bharatiya Janata Party

Date: 23rd 06, 2024

Shri Mallikarjun Kharge Ji,

Hope this letter finds you in good health. It is with a very heavy heart I write this letter to you, not merely in the capacity of the National President of BJP but more importantly as a Bharatiya.

The ghastly images of burning funeral pyres, from Karunapuram village in Kallakurichi, Tamil Nadu, in the aftermath of Tamil Nadu's worst ever spurious liquor consumption tragedy, that has left 56 dead until now and almost 159 persons hospitalized, has shaken the conscience of the entire nation. Visuals of crying women and children who have lost their husbands, sons and fathers have left everyone speechless. This is a human tragedy of enormous proportions, which words alone can never truly encapsulate. BJP, being a sensitive party, has not only extended full condolences and sympathies to the people of Tamil Nadu during this period of mourning but has been providing utmost support to every distraught family.

But even as we collectively mourn this great loss I am constrained to acquaint you with a few shocking facts and circumstances, which perhaps could have helped in averting this mindless loss of innocent lives. And if, even at this stage, I dither from my moral obligation to present these facts before you for your cognizance and action, I would be failing in my responsibilities towards humanity as a whole.

6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110 002 Phone: 011-23500000

Kharge ji the tragedy in Kallakurichi is entirely a man-made disaster and perhaps if the deep nexus between the ruling DMK-INDI ALLIANCE dispensation and illicit liquor mafia did not exist, today 56 lives could have been saved. In May 2023, around 23 people had once again succumbed by consuming illicit liquor in Villupuram and Chengalpattu. At that time too, the BJP had cautioned the ruling DMK-INDI ALLIANCE Alliance government of complicity and nexus between their functionaries and the illicit liquor mafia. But no attention was paid to our sincere exhortations. May I remind you that in 2021 the Congress manifesto had detailed a plan for liquor prohibition in the state. Such lofty promises have been made by DMK-INDI ALLIANCE too in the past. Ironically, your DMK-INDI ALLIANCE government is now the biggest patroniser of illicit spurious liquor trade that has claimed hundreds of lives whenever you are in power.

In the present case too, media and investigative reports so far have made it clear as to how this business of illicit liquor was functioning with impunity, right in the open and during broad daylight, obviously with patronage from the state and police. When the disaster struck, instead of immediately taking accountability and saving lives, the state administration was busy in trying to cover up. That cover up itself proved fatal and led to loss of more lives. There are documented accounts about how one of the main accused was let off by the police just a few days ago, perhaps because of his political patronage and corruption in the law and order system, of which there is proof too. In light of these incontrovertible facts coming to the public domain, can this be termed as anything other than a "state sponsored murder"? I am sure you too with your vast experience in public life and administration would reach the same conclusion as me. But what has been most disappointing is the brazen response of the DMK-INDI ALLIANCE - INDI Alliance government led by Thiru M K Stalin, who continues to be in complete denial. His government continues to block a free and fair independent probe by opposing a CBI investigation. Kharge ji when the police role itself is suspect can the Tamil Nadu police or CB-CID be trusted to investigate this fairly? When there is clear political patronage and nexus involved- will the true perpetrators ever be brought to justice by such a probe? Thiru Stalin instead of immediately asking his Minister for Excise and Prohibition Shri Muthuswamy to step down has been stifling the opposition from raising its voice inside the Tamil Nadu Assembly and outside, which is our constitutional, democratic right. Many BJP Tamil Nadu leaders have been prevented from raising their voice for justice and Nyay for these victims. Indeed the muzzling of right of the opposition parties to raise this issue of public importance is a big assault not only on free speech but also on the Constitutional and democratic ethos of Bharat.

Kharge ji, as you know Karunapuram is largely populated by the Scheduled Castes, who face several challenges due to poverty and discrimination in Tamil Nadu. In light of this, I was shocked that when such a huge disaster has taken place, the Congress party led by you, has maintained a stoic silence on this. Certain issues require us to rise above and beyond party lines and the welfare and safety of the SC, ST community is one such issue. Kharge ji today it is time to truly walk the talk on "Nyay" and not reduce it to a catchy campaign slogan, deployed for the launch of a failed political dynast. Today, the people of Tamil Nadu and the entire SC community are witnessing the double speak of the Congress party and particularly of Shri Rahul Gandhi and leaders of the I.N.D.I. Alliance. Suddenly, all the sanctimonious preachings of Shri Rahul Gandhi about Constitution and ensuring the welfare and rights of SC /OBC community have stopped. Instead of taking action, DMK-INDI ALLIANCE -Congress' ally Kamal Haasan, went and rubbed salt into the wounds of the victim's families by blaming them rather than the corrupt nexus of illicit liquor mafia and DMK-INDI ALLIANCE functionaries. He even alluded to giving people in the area "psychiatric counselling". Instead of providing succour and relief , SC victims are being shamed by your allies. It is time to act Kharge ji. Empty words, peddling fake narratives and hollow promises will not undo the Anyay heaped upon the SC victims and their families by the DMK-INDI ALLIANCE government.

At this juncture, the BJP and the entire nation indeed demand that you press upon the DMK-INDI Alliance Tamil Nadu government to go for a CBI probe and ensure the immediate removal of the Thiru Muthuswamy as minister. We also demand on behalf of the victim's families that you enhance the compensation to a reasonable level that can ensure these families have adequate support. We seek that Thiru MK Stalin , who is Home Minister of Tamil Nadu as well, should visit the families and the area and ensure strict crackdown on corrupt officials rather than patronise and defend them brazenly. We also urge you to pursue Shri Rahul Gandhi and Smt Priyanka Vadra, to either pay a visit to the victim's families or atleast muster the courage to raise their voice on this issue rather than maintaining a defeaning selective, hypocritical silence.

Finally, there seems to be a penchant for illegal liquor business and Sharab Ghotala amongst many constituents of your I.N.D.I. Alliance. Such proclivities damage the nation and society. You ought to purge your alliance of such elements, who go against the basic philosophies of Mahatma Gandhi ji who was strictly against alcohol consumption and indulge in patronising illicit liquor trade or liquor scams. Finally, I invite you to join our leaders for a black band protest against this "state sponsored disaster" in front of the statue of Mahatma Gandhi inside the Prerna Sthal within Parliament precincts.

Yours

(Jagat Prakash Nadda)

ये राहुल गाँधी की माताजी सोनिया गाँधी ही थी न खड़गे जी जिन्होंने मोदी जी के लिए 'मौत का सौदागर' जैसे अत्यंत असभ्य अपशब्दो का प्रयोग किया था? इन सभी दुर्भाग्यपूर्ण और शर्मनाक बयानों का तो आप और आपकी पार्टी के नेता महिमामंडन करते रहे। क्यों तब राजनीतिक शुचिता की बातें कांग्रेस भूल गई थी? जब राहुल गाँधी ने सरेआम 'मोदी की छवि को खराब कर देंगे' वाली बात कही थी तो राजनीतिक मर्यादा को किसने खंड–खंड किया था खड़गे जी? मैं ये समझता हूँ खड़गे जी कि अपने नित्य निरंतर Failed product का बचाव करना और उसे महिमामंडित करना आपकी मजबूरी है लेकिन कम से कम कांग्रेस अध्यक्ष होने के नाते आपको इन चीजों पर आत्ममंथन भी तो करना चाहिए था।

खड़गे जी, बड़े दुःख की बात है कि देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी अब अपने नामदार युवराज के दबाव में "copy & past" वाली पार्टी बन कर रह गई है। राजनीतिक लोलुपता की पराकाश्ठा करते हुए अब राहुल गाँधी वाले दुर्विकार कांग्रेस पार्टी भी अंगीकार करने लगी है और विडम्बना यह भी कि वह उससे ही अपने आपको अलंकृत भी महसूस करने लगी है। कांग्रेस एंड कंपनी के नेताओं ने पिछले 10

सालों में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को 110 से अधिक गालियाँ दी हैं और दुर्भाग्य की बात यह भी है कि इसमें कांग्रेस का शीर्श नेतृत्व भी शामिल है। तब क्यों राजनीतिक शुचिता, मर्यादा, अनुशासन, शिश्टाचार जैसे शब्द आपकी और कांग्रेस की dictionary से गायब हो जाते हैं? एक तरफ आप राजनीतिक शुचिता की दुहाई दे रहे हैं लेकिन दूसरी ओर आपकी पार्टी और आपके नेताओं का इतिहास ही राजनीतिक शुचिता की धज्जियाँ उड़ाने का रहा है। ऐसा दोहरा रवैया क्यों?

खड़गे जी, क्या–क्या नहीं कहा गया आपके नेताओं के द्वारा देश के प्रधानमंत्री के लिए? कभी कहा गया **'मोदी तेरी कब्र खुदेगी', कभी कहा गया 'नीच', कभी 'कमीना'? कभी 'मौत का सौदागर', कभी 'जहरीला सांप', कभी 'बिच्छू', कभी 'चूहा', कभी 'रावण', कभी 'भस्मासुर', कभी 'नालायक', कभी 'कुत्ते की मौत मरेगा', कभी 'मोदी को जमीन में गाड़ देंगे', कभी 'राक्षस', कभी 'दुश्ट', कभी 'कातिल', कभी 'हिन्दू जिन्ना', कभी 'जनरल डायर', कभी 'मोतियाबिन्द का मरीज', कभी 'जेबकतरा', कभी 'गंदी नाली', कभी 'काला अंग्रेज', कभी 'कायर', कभी 'औरंजेब का आधुनिक अवतार', कभी 'दुर्योधन', कभी हिन्दू आतंकवादी', कभी 'गदहा', कभी 'नामर्द', कभी 'चौकीदार चोर है', कभी 'तुगलक', कभी 'मोदी की बोटी–बोटी काट देंगे', कभी साला मोदी', कभी 'नमक हराम', कभी 'गंवार', कभी 'निकम्मा'**। यहाँ तक कि उनके माता–पिता को भी नहीं छोड़ा गया, उनका भी अपमान किया गया। आजाद भारत के इतिहास में किसी भी जननेता का अपमान कभी नहीं किया गया, जितना आपकी पार्टी के नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री का किया। इतना ही नहीं, आपकी पार्टी के जिन नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री का किया। इतना ही नहीं, आपकी पार्टी के जिन नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री को जितनी बड़ी गाली दी, उसे कांग्रेस में उतने बड़े–बड़े पद दे दिए गए। अगर मैं ऐसे उदाहरण गिनाने लग जाऊं, तो आपको भी पता है कि उसके लिए अलग से किताब लिखनी पड़ेगी। क्या ऐसे बयानों और हरकतों ने देश को शर्मसार नहीं किया, राजनीतिक मर्यादा को तार–तार किया? आप इसे कैसे भूल गए खड़गे जी?

खड़गे जी, कांग्रेस पार्टी राहुल गाँधी पर किस बात का गर्व करती है? इसलिए कि वे पाकिस्तान परस्त भारत विरोधी लोगों के साथ गलबहियां करते हैं या इसलिए कि वे आतंकियों के समर्थन वाले कार्यक्रम में जाकर खड़े हो जाते हैं? इसलिए कि वे देश को तोड़ने वाली ताकतों से समर्थन मांगते हैं या इसलिए कि वे विदेशी ताकतों से देश के लोकतंत्र में हस्तक्षेप की मांग करते हैं? इसलिए कि वे देश में आरक्षण और जाति की राजनीति कर एक समाज को दूसरे समाज के खिलाफ भड़काते हैं या इसलिए कि वे विदेशी धरती पर जाकर आरक्षण को खत्म कर दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों का हक छीनने की मंशा जाहिर करते हैं? इसलिए कि वे जम्मू–कश्मीर की शांति के खिलाफ विशवमन करते हैं या इसलिए कि वे आतंकियों की रिहाई, पाकिस्तान से बातचीत, पाकिस्तान के साथ व्यापार और धारा 370 को फिर से लाने का समर्थन करते हैं? इसलिए कि वे हिंदू को पाकिस्तानी आतंकी संगठनों से भी बड़ा खतरा बताते हैं या इसलिए कि वे बार–बार हिंदू सनातन संस्कृति का अपमान करते हैं? इसलिए कि वे सेना के जवानों की वीरता के सबूत मांगते हैं या इसलिए कि वे जवानों की वीरता को 'खून की दलाली' की संज्ञा देते हैं? इसलिए सिख भाइयों की पगड़ी और कड़े पर विवादास्पत बयान देते हैं? ऐसे में आपका पत्र खिना कांग्रेस के स्पश्ट दोहरे मानदंड को उजागर करता है कि नहीं?

खड़गे जी, राहुल गाँधी के अतिरिक्त सैम पित्रोदा से लेकर इमरान मसूद तक, के सुरेश से लेकर दिग्विजय सिंह तक, शशि थरूर से लेकर पी0चिदंम्बरम और सुशील शिंदे तक, आपके नेताओं ने देश को बदनाम करने के लिए क्या–क्या नहीं किया? उत्तर को दक्षिण से लड़ाना, एक समाज को दूसरे के खिलाफ फड़काना– यही तो कांग्रेस का परिचय हो गया है। आपके नेताओं के कार्यक्रम में 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगते हैं तो देशविरोधी ताकतों का महिमामंडन होता है। तब क्यों आपको पत्र लिखने का खयाल नहीं आता?

खड़गे जी, भारत के महान लोकतंत्र को सबसे अधिक अपमानित और लांछित यदि किसी ने किया है, तो वह केवल और केवल कांग्रेस पार्टी है, ये आप भलीभांति जानते और समझते हैं। ये कांग्रेस ही है जिसने देश पर आपातकाल धोपा, ट्रिपल तलाक का समर्थन किया, सभी संवैधानिक संस्थाओं को बदनाम किया और उसे कमजोर किया। आप जो अच्छी तरह से जानते हैं खड़गे जी कि किसने कहा था इस देश के संसाधनों पर पहला हक एक वर्ग विशेश का है? आप यह भी जानते हैं कि कांग्रेस द्वारा शासित राज्यों में कैसे दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों का हक मारा जा रहा है। इसलिए खड़गे जी, आपके नेता राहुल गाँधी द्वारा संचालित सत्ता स्वार्थ में डूबी कांग्रेस पार्टी की कथित मुहब्बत की दुकान में जो प्रोडक्ट बेंचा जा रहा है, वह जातिवाद का जहर है, वैमनस्यता का बीज है, राश्ट्रविरोध का मसाला है, देश को बदनाम करने का केमिकल है और देश को तोड़ने का हथौड़ा है। खड़गे जी, आशा है – आप, आपकी पार्टी और आपके नेता को अपने प्रश्नों के उचित उत्तर मिल गए होंगे। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ आपको सदबुद्धि दें और देशहित में काम करने की शक्ति दें।

उड़ीसा विकास की नई उड़ान भरेगा : मोदी

भगवान जगन्नाथ की कृपा से आज एक बार फिर मुझे ओडिशा की पावन धरती पर आने का सौभाग्य मिला है। जब भगवान जगन्नाथ की कृपा होती है, जब भगवान जगन्नाथ जी का आशीर्वाद बरसता है, तब भगवान जगन्नाथ की सेवा के साथ ही जनता जनार्दन की सेवा का भी भरपूर अवसर मिलता है।

आज देश भर में गणेश उत्सव की धूम है, गणपति को विदाई दी जा रही है। आज अनंत चतुर्दशी का पावन पर्व भी है। आज ही विश्वकर्मा पूजा भी है। दुनिया में भारत ही ऐसा देश है, जहां श्रम और कौशल को विश्वकर्मा के रूप में पूजा जाता है। मैं सभी देशवासियों को विश्वकर्मा जयंती की भी शुभकामनाएं देता हूं।

ऐसे पवित्र दिन अभी मुझे ओडिशा की माताओं–बहनों के लिए सुभद्रा योजना का शुभारंभ करने का अवसर मिला है। और ये भी महाप्रभु की कृपा है कि माता सुभद्रा के नाम से योजना का आरंभ हो और स्वयं इंद्र देवता आशीर्वाद देने के लिए पधारे हैं। आज देश के 30 लाख से ज्यादा परिवारों को यहीं भगवान जगन्नाथ जी की धरती से देशभर के अलग–अलग गांवों में लाखों परिवारों को पक्के घर भी दिये गए हैं। इनमें से 26 लाख घर हमारे देश के गांवों में और 4 लाख घर हमारे देश के अलग–अलग शहरों में ये घर दिए गए हैं। यहां ओडिशा के विकास के लिए हजारों करोड़ की विकास परियोजनाओं का भी लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है। मैं आप सबको, ओडिशा के सभी लोगों को, सभी देशवासियों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ।

ओडिशा में भाजपा के नेतृत्व में नई सरकार बनते समय मैं शपथ ग्रहण समारोह में आया था। उसके बाद ये मेरी पहली यात्रा है। जब चुनाव चल रहे थे, तब मैंने आपसे कहा था, यहां डबल इंजन की सरकार बनेगी तो ओडिशा विकास की नई उड़ान भरेगा। जो सपने यहाँ के गाँव–गरीब, दलित–आदिवासी ऐसे हमारे वंचित परिवारों ने देखे हैं, जो सपने हमारी माताओं, बहनों, बेटियों ने, महिलाओं ने, जो सपने हमारे नौजवानों ने, हमारे नौजवान बेटियों ने, जो सपने हमारे मेहनतकस मध्यम वर्ग ने देखे हैं, उन सबके सपने भी पूरे होंगे, ये मेरा विश्वास है और महाप्रभु का आशीर्वाद है। आज आप देखिए जो वादे हमने किए थे, वो अभूतपूर्व गति से पूरे हो रहे हैं। हमने कहा था, हम सरकार बनते ही भगवान जगन्नाथ के मंदिर के चारों द्वार खोलेंगे। सरकार बनते ही हमने भगवान जगन्नाथ मंदिर परिसर के बंद द्वार खुलवा दिये। जैसा हमने कहा था, मंदिर का रत्न भंडार भी खोल दिया गया। भाजपा सरकार दिन रात जनता–जनार्दन की सेवा के लिए काम कर रही है। हमारे मोहन जी, के. वी. सिंह देव जी, बहन प्रभाती परीडा जी, और सभी मंत्रियों के नेतृत्व में सरकार खुद जनता के पास जा रही है, उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास कर रही है। और मैं इसके लिए यहां की मेरी पूरी टीम की, मेरे सभी साथियों की भरपूर प्रशंसा करता हूं, मैं उनकी सराहना करता हूं।

आज का ये दिन एक और वजह से भी विशेष है। आज केंद्र की एनडीए सरकार के 100 दिन भी हो रहे हैं। इस दौरान, गरीब, किसान, नौजवान और नारीशक्ति के सशक्तिकरण के लिए बड़े–बड़े फैसले लिए गए हैं। बीते 100 दिन में तय हुआ कि गरीबों के लिए 3 करोड़ पक्के घर बनाएंगे। बीते 100 दिनों में नौजवानों के लिए 2 लाख करोड़ रुपए का पीएम पैकेज घोषित किया गया है। युवा साथियों को इसका बहुत लाभ होगा। इसके तहत प्राइवेट कंपनियों में नौजवानों की पहली नौकरी की पहली सैलरी सरकार देने वाली है। ओडिशा सहित पूरे देश में 75 हज़ार नई मेडिकल सीटें जोड़ने का भी फैसला किया गया है। कुछ दिन पहले ही 25 हज़ार गांवों को पक्की सड़क से जोड़ने की योजना को भी स्वीकृति दी गई है। इसका फायदा मेरे ओडिशा के गांवों को भी होगा। बजट में जनजातीय मंत्रालय के बजट में करीब दोगुनी बढ़ोतरी की गई है। देशभर में करीब 60 हज़ार आदिवासी गांवों के विकास के लिए विशेष योजना की घोषणा की गई है। बीते 100 दिनों में ही सरकारी कर्मचारियों के लिए एक शानदार पेंशन योजना की भी घोषणा की गई है। जो कर्मचारी हैं, जो दुकानदार हैं, मध्यम वर्ग के उद्यमी हैं, उनके इनकम टैक्स में भी कमी की गई है।

बीते 100 दिन में ही ओडिशा सहित पूरे देश में 11 लाख नई लखपति दीदी बनी हैं। हाल में ही धान किसानों, तिलहन और प्याज किसानों के लिए बड़ा निर्णय लिया गया है। विदेशी तेल

के आयात पर शुल्क बढ़ाया गया है, ताकि देश के किसानों से ज्यादा कीमत पर खरीद हो। इसके अलावा बासमती के निर्यात पर लगने वाला शुल्क घटाया गया है। इससे चावल के निर्यात को बल मिलेगा और बासमती उगाने वाले किसानों को ज्यादा फायदा होगा। खरीफ की फसलों पर डैच बढ़ाया गया है। इससे देश के करोड़ों किसानों को करीब 2 लाख करोड़ रुपए का फायदा होगा। बीते 100 दिन में सबके हित में ऐसे कई बड़े कदम उठाए गए हैं।

कोई भी देश, कोई भी राज्य तभी आगे बढ़ता है, जब उसके विकास में उसकी आधी आबादी यानि हमारी नारीशक्ति की बराबर भागीदारी होती है। इसलिए, महिलाओं की उन्नति, महिलाओं का बढ़ता सामर्थ्य, ये ओडिशा के विकास का मूलमंत्र होने वाला है। यहाँ तो भगवान जगन्नाथ जी के साथ देवी सुभद्रा की मौजूदगी भी हमें यही बताती है, यही सिखाती है। मैं यहां देवी सुभद्रा स्वरूपा सभी माताओं–बहनों–बेटियों को आदरपूर्वक नमन करता हूं। मुझे खुशी है कि भाजपा की नई सरकार ने अपने सबसे शुरुआती फैसलों में ही सुभद्रा योजना की सौगात हमारी माताओं–बहनों को दी है। इसका लाभ ओडिशा की 1 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को मिलेगा। इस योजना के तहत महिलाओं को कुल 50 हजार रुपए की राशि दी जाएगी। ये पैसा समय–समय पर आपको मिलता रहेगा। ये राशि सीधे माताओं–बहनों के बैंक खातों में भेजी जाएगी, बीच में कोई बिचौलिया नहीं, सीधा आपके पास। त्ठप् की डिजिटल करेंसी के पायलट प्रोजेक्ट से भी इस योजना को जोड़ा गया है। इस डिजिटल करेंसी को आप सभी बहनें, जब मन आए डिजिटल तरीके से खर्च भी कर पाएंगी। देश में डिजिटल करेंसी की अपनी तरह की इस पहली योजना से जुड़ने के लिए मैं ओडिशा की माताओं, बहनों, बेटियां सभी महिलाओं को बहुत–बहुत बधाई देता हूं। सुभद्रा जोजोना मा ओ भौउणी मानंकु सशक्त करू, मा सुभद्रांक निकट–रे एहा मोर प्रार्थना।

मुझे बताया गया है, सुभद्रा योजना को ओडिशा की हर माता–बहन–बेटी तक पहुंचाने के लिए पूरे प्रदेश में कई यात्राएं भी निकाली जा रही हैं। इसके लिए माताओं–बहनों को जागरूक किया जा रहा है। योजना से जुड़ी सारी जानकारी दी जा रही है। भारतीय जनता पार्टी के, भाजपा के लाखों कार्यकर्ता भी इस सेवा अभियान में पूरे जोर–शोर से जुटे हैं। मैं इस जनजागरण के लिए सरकार, प्रशासन के साथ–साथ भाजपा के विधायक, भाजपा के सांसद और भाजपा के लाखों पार्टी कार्यकर्ताओं को बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।

भारत में महिला सशक्तिकरण का एक और प्रतिबिंब है– प्रधानमंत्री आवास योजना। इस योजना के कारण छोटे से छोटे गाँव में भी अब संपत्ति महिलाओं के नाम होने लगी है। आज ही यहाँ देश भर के लगभग 30 लाख परिवारों का गृहप्रवेश करवाया गया है। अभी तीसरे कार्यकाल में हमारी सरकार के कुछ महीने ही हुए हैं, इतने कम समय में ही 15 लाख नए लाभार्थियों को आज स्वीकृति पत्र भी दे दिए गए हैं। 10 लाख से ज्यादा लाभार्थियों के बैंक खातों में पैसे भेजे गए हैं, ये शुभ काम भी हमने ओडिशा की, महाप्रभु की इस पवित्र धरती से किया है, और इसमें बड़ी संख्या में मेरे ओडिशा के गरीब परिवार भी शामिल हैं। जिन लाखों परिवारों को आज पक्का घर मिला है, या पक्का घर मिलना पक्का हुआ है, उनके लिए ये जीवन की नई शुरुआत है और पक्की शुरूआत है।

यहाँ आने से पहले मैं हमारे एक आदिवासी परिवार के गृहप्रवेश के कार्यक्रम में उनके घर भी गया था। उस परिवार को भी अपना नया पीएम आवास मिला है। उस परिवार की खुशी, उनके चेहरों का संतोष, मैं कभी नहीं भूल सकता। उस आदिवासी परिवार ने मुझे मेरी बहन ने खुशी से खीरी भी खिलाई! और जब मैं खीरी खा रहा था तो स्वाभाविक था कि मुझे मेरी मां की याद आना, क्योंकि जब मेरी मां जीवित थी तो मैं जन्मदिन पर हमेशा मां के आशीर्वाद लेने जाता था, और मां मेरे मुंह में गुड़ खिलाती थी। लेकिन मां तो नहीं है आज एक आदिवासी मां ने खीर खिलाकर मुझे जन्मदिन का आशीर्वाद दिया। ये अनुभव, ये अहसास मेरे पूरे जीवन की पूंजी है। गाँव–गरीब, दलित, वंचित, आदिवासी समाज के जीवन में आ रहा ये बदलाव, उनकी ये खुशियाँ ही मुझे और मेहनत करने की ऊर्जा देती हैं।

ओडिशा के पास वो सब कुछ है, जो एक विकसित राज्य के लिए जरूरी होता है। यहाँ के युवाओं की प्रतिभा, महिलाओं का सामर्थ्य, प्राकृतिक संसाधन, उद्योगों के लिए अवसर, पर्यटन की अपार संभावनाएं, क्या कुछ यहाँ नहीं है? पिछले 10 वर्षों में केवल केंद्र में रहते हुये ही हमने ये साबित किया है कि ओडिशा हमारे लिए कितनी बड़ी प्राथमिकता है। 10 वर्ष पहले केंद्र की तरफ से ओडिशा को जितना पैसा मिलता था, आज उससे तीन गुना ज्यादा पैसा मिलता है। मुझे खुशी है कि अब ओडिशा में वो योजनाएं भी लागू हो रही हैं, जो पहले लागू नहीं थीं। आयुष्मान योजना के तहत 5 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज का लाभ अब ओडिशा के लोगों को भी मिलेगा। और इतना ही नहीं, अब तो केंद्र सरकार ने 70 साल के ऊपर के बुजुर्ग के लिए भी 5 लाख रुपए का इलाज मुफ्त कर दिया है। आपकी आय चाहे कितनी ही हो, आपके घर में अगर 70 साल के ऊपर के बुजुर्ग हैं, उनकी उम्र 70 साल से ऊपर है तो उनके इलाज की चिंता मोदी करेगा। लोकसभा चुनाव के समय मोदी ने आपसे ये वायदा किया था और मोदी ने अपनी गारंटी पूरी करके दिखाई है।

गरीबी के खिलाफ भाजपा के अभियान का सबसे बड़ा लाभ ओडिशा में रहने वाले दलित, वंचित और आदिवासी समाज को मिला है। ओडिशा में कितने ही ऐसे आदिवासी इलाके, कितने ऐसे जनजातीय समूह थे, जो कई–कई पीढ़ियों तक विकास से वंचित थे। केंद्र सरकार ने जनजातियों में भी सबसे पिछड़ी जनजातियों के लिए पीएम जनमन योजना शुरू की

है। ओडिशा में ऐसी 13 जनजातियों की पहचान की गई है। जनमन योजना के तहत सरकार इन सभी समाजों तक विकास योजनाओं का लाभ पहुंचा रही है। आदिवासी क्षेत्रों को सिकल सेल एनीमिया से मुक्त करने के लिए भी अभियान चलाया जा रहा है। पिछले 3 महीने में इस अभियान के तहत 13 लाख से ज्यादा लोगों की स्क्रीनिंग की गई है।

आज हमारा देश पारंपरिक कौशल के संरक्षण पर भी अभूतपूर्व रूप से फोकस कर रहा है। हमारे यहां सैकड़ों–हजारों वर्षों से लोहार, कुम्हार, सुनार, मूर्तिकार जैसे काम करने वाले लोग रहे हैं। ऐसे 18 अलग–अलग पेशों को ध्यान में रखते हुए पिछले साल विश्वकर्मा दिवस पर विश्वकर्मा योजना शुरू की गई थी। इस योजना पर सरकार 13 हजार करोड़ रुपए खर्च कर रही है। अभी तक 20 लाख लोग इसमें रजिस्टर हो चुके हैं। इसके तहत विश्वकर्मा साथियों को ट्रेनिंग दी जा रही। आधुनिक औज़ार खरीदने के लिए हज़ारों रुपए दिए जा रहे हैं। साथ ही बिना गारंटी का सस्ता लोन बैंकों से दिया जा रहा है। गरीब के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा से लेकर सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा तक की ये गारंटी, उनके जीवन में आ रहे ये बदलाव, यही विकसित भारत की असली ताकत बनेंगे।

ओडिशा के पास इतना बड़ा समुद्री तट है। यहाँ इतनी खनिज सम्पदा है, इतनी प्राकृतिक सम्पदा है। हमें इन संसाधनों को ओडिशा का सामर्थ्य बनाना है। अगले 5 साल में हम ओडिशा को रोड और रेलवे की कनेक्टिविटी को नई ऊंचाई पर लेकर जाना है। आज भी, यहाँ रेल और रोड से जुड़ी कई परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया है। आज मुझे लांजीगढ़ रोड–अंबोदला–डोइकालू रेल लाइन देश को समर्पित करने का सौभाग्य मिला है। लक्ष्मीपुर रोड–सिंगाराम–टिकरी रेल लाइन भी आज देश को समर्पित की जा रही है। इसके साथ ही ढेंकनाल – सदाशिवपुर – हिंडोल रोड रेल लाइन भी राष्ट्र को समर्पित किया जा रहा है। पारादीप से कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए भी आज काफी काम शुरू हुए हैं। मुझे जयपुर–नवरंगपुर नई रेलवे लाइन की आधारशिला रखने का सौभाग्य भी मिला है। इन प्रोजेक्ट्स से ओडिशा के युवाओं के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के नए अवसर तैयार होंगे। वो दिन दूर नहीं जब पुरी से कोणार्क रेलवे लाइन पर भी तेजी से काम शुरू होगा। हाइटेक 'नमो भारत रैपिड रेल' भी बहुत जल्द ही ओडिशा को मिलने वाली है। ये आधुनिक इनफ्रास्ट्रक्चर ओडिशा के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलेगा। देश हैदराबाद मुक्ति दिवस भी मना रहा है। आज़ादी के बाद हमारा देश जिन हालातों में था, विदेशी ताक़तें जिस तरह देश को कई टुकड़ों में तोड़ना चाहती थीं। अवसरवादी लोग जिस तरह सत्ता के लिए देश के टुकड़े–टुकड़े करने के लिए तैयार हो गए थे। उन हालातों में सरदार पटेल सामने आए। उन्होंने असाधारण इच्छाशक्ति दिखाकर देश को एक किया। हैदराबाद में भारत–विरोधी कट्टरपंथी ताकतों पर नकेल कसकर 17 सिंतबर को हैदराबाद को मुक्त कराया गया। इसलिए हैदराबाद मुक्ति दिवस, ये केवल एक तारीख नहीं है। ये देश की अखंडता के लिए, राष्ट्र के प्रति हमारे दायित्वों के लिए एक प्रेरणा भी है।

आज के इस अहम दिन हमें उन चुनौतियों पर भी ध्यान देना है जो देश को पीछे धकेलने में जुटी हैं। आज जब हम गणपति बप्पा को विदाई दे रहे हैं तो मैं एक विषय इसी से जुड़ा उठा रहा हूं। गणेश उत्सव, हमारे देश के लिए केवल एक आस्था का पर्व ही नहीं है। गणेश उत्सव ने हमारे देश की आज़ादी में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। जब सत्ता की भूख में अंग्रेज़ देश को बांटने में लगे थे। देश को जातियों के नाम पर लड़वाना, समाज में जहर घोलना, 'बांटो और राज करो', ये अंग्रेजों का हथियार बन गया था, तब लोकमान्य तिलक ने गणेश उत्सव के सार्वजनिक आयोजनों के जरिए भारत की आत्मा को जगाया था। ऊंच–नीच, भेदभाव, जात–पात, इन सबसे ऊपर उठकर हमारा धर्म हमें जोड़ना सिखाता है, गणेश उत्सव इसका प्रतीक बन गया था। आज भी, जब गणेश उत्सव होता है, हर कोई उसमें शामिल होता है। कोई भेद नहीं, कोई फर्क नहीं, पूरा समाज एक शक्ति बनकर के, एक सामर्थ्यवान बनकर के खड़ा होता है।

'बांटो और राज करो' की नीति पर चलने वाले अंग्रेजों की नज़रों में उस समय भी 'गणेश उत्सव' खटकता था। आज भी, समाज को बांटने और तोड़ने में लगे सत्ता के भूखे लोगों को गणेश पूजा से परेशानी हो रही है। आपने देखा होगा कॉंग्रेस और उसके मबवेलेजमउ के लोग पिछले कुछ दिनों से इसलिए भड़के हुए हैं, क्योंकि मैंने गणपति पूजन में हिस्सा लिया था। और तो और कर्नाटक में, जहां इनकी सरकार है, वहाँ तो इन लोगों ने और भी बड़ा अपराध किया। इन लोगों ने भगवान गणेश की प्रतिमा को ही सलाखों के पीछे डाल दिया। पूरा देश उन तस्वीरों से विचलित हो गया। ये नफरत भरी सोच, समाज में जहर घोलने की ये मानसिकता, ये हमारे देश के लिए बहुत खतरनाक है। इसलिए ऐसी नफरती ताकतों को हमें आगे नहीं बढ़ने देना है।

हमें साथ मिलकर अभी कई बड़े मुकाम हासिल करने हैं। हमें ओडिशा को, अपने देश को, सफलता की नई ऊंचाइयों पर लेकर जाना है। ओड़िसा बासींकरो समर्थनो पाँईं मूँ चीरअ रुणी, मोदी–रो आस्सा, सारा भारत कोहिबो, सुन्ना–रो ओड़िसा। मुझे विश्वास है, विकास की ये रफ्तार आने वाले समय में और तेज होगी। मैं एक बार फिर आप सबको बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।

आदिवासी समाज के कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाना हो, आदिवासी समाज को जड़–जंगल–जमीन के अधिकार देने की बात हो, आदिवासी युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर देना हो या ओडिशा की आदिवासी महिला को देश की माननीय राष्ट्रपति बनाना हो, ये काम पहली बार हमने किए हैं।

श्रद्धा की अभिव्यक्ति श्राद्ध

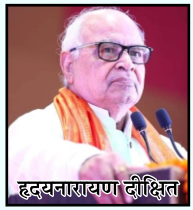
हृदयनारायण दीक्षित

श्रद्धा भाव है और श्राद्ध कर्मकाण्ड। श्रद्धा मन का प्रसाद है। प्रसाद आंतरिक आनंद देता है। पतंजलि ने श्रद्धा को चित्त की स्थिरिता या अक्षोभ से जोड़ा है। श्रद्धा की दशा में क्षोभ नहीं होता। श्रद्धा की अभिव्यक्ति श्राद्ध है। भारतीय विद्वानों ने श्रद्धा भाव को श्राद्ध कर्म बनाया। पिता, पितामह और प्रपितामह के लिए अन्न भोजन जल आदि के अर्पण तर्पण का कर्मकाण्ड बनाया। श्रद्धा है कि अर्पित किया गया भोजन पितरों को मिलता है। वे प्रसन्न होते हैं और सन्तति को सभी सुख साधन देते हैं। हम भारतवासी वरिष्ठों, पूर्वजों के प्रति श्रद्धालु रहते हैं। संप्रति पितर पक्ष है। इस समय को पितरों के प्रति श्राद्ध के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। लोकमान्यता है कि इस पक्ष में पूर्वज पितर आकाश लोक आदि से उतरकर धरती पर आते हैं। हम पूरे वर्ष तमाम गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं। इसी में 15 दिन पितरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के हैं। वैदिक निरूक्त में श्रत और श्रद्धा को सत्य बताया गया है। पितरों का आदर मानवीय गुण है। हम पितृपंक्ति का विस्तार हैं। वे थे, इसलिए हम हैं। उन्होंने पालन पोषण दिया, स्वयं की महत्वाकांक्षाएं छोड़ी। उन्होंने हमारी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तमाम कर्म किए। वे नमस्कारों के योग्य हैं। वे श्रद्धेय हैं।

कुछ विद्वान कहते हैं कि ऐसे कर्मकाण्ड वैज्ञानिक ष्टिकोण की संगति में नहीं आते। वे अंधवि वास जान पड़ते हैं। लेकिन कर्मकाण्ड निराधार नहीं होते। सभ्य समाज में पितरों का आदर होना ही चाहिए।

कुछ विद्वान कहते हैं कि ऐसे कर्मकाण्ड वैज्ञानिक दृष्टिकोण की संगति में नहीं आते। वे अंधविश्वास जान पड़ते हैं। लेकिन कर्मकाण्ड निराधार नहीं होते। सभ्य समाज में पितरों का आदर होना ही चाहिए। श्राद्धकर्म की वैज्ञानिकता की बहस पुरानी है। मत्स्य पुराण (19.2) में प्रश्न है कि श्राद्ध का भोजन पुरोहित या अग्नि को अर्पित होता है, क्या वह मृत पूर्वजों द्वारा खाया जाता है? जो मृत्यु के बाद अन्य शरीर धारण कर चुके होते हैं?" इस प्रश्न का उत्तर भी दिया गया है, "पिता, पितामह और प्रपितामह को वैदिक मंत्रों में क्रमशः वसु, रूद्र और आदित्य देव के समान माना गया है। वे नाम परिचय सहित उच्चारण किए गए मंत्रों आहुतियों को पितरों के पास ले जाते हैं। यदि पितर सत्कर्म के कारण देवता हो गए हैं तो वह भोजन आनंद रूप में उनके पास पहुंचता है, यदि पशु हो गए हैं तो भोजन घास हो जाता है यदि सर्प जैसे रेंगने वाली योनि में हैं तो यह भोजन वायु आदि के रूप में उन्हें मिलता है।"

मत्स्य पुराण के प्रश्न तत्कालीन समाज के जिज्ञासुओं के तर्क हैं। प्रश्नों के उत्तर श्राद्ध समर्थकों के स्पष्टीकरण हो सकते हैं। श्रद्धा कर्म परम्परा पुरानी है और पुनर्जन्म पर विश्वास भी प्राचीन है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म की चर्चा है। लेकिन संतानों द्वारा प्रेषित भोजन पितरों को मिलने की धारणा में पुनर्जन्म सिद्धांत का मेल नहीं है। पहले बात साफ थी कि मृतात्माएं श्राद्धकर्म का भोजन पाती हैं। पुनर्जन्म सिद्धांत के कारण आत्मा के नए शरीर धारण की बात आई। आर्य समाज श्राद्धकर्म के पक्ष में नहीं है। बेशक उसने वैदिक दर्शन को प्रतिष्ठा दी। उसके सामने ऋग्वेद में पितरों के उल्लेख की समस्या थी। आर्य समाज ने ऋग्वैदिक पितरों को मृत नहीं माना। उन्हें जीवित वानप्रस्थी बताया। समस्या शतपथ ब्राह्मण के रचनाकार के सामने भी थी। यहां मंत्र है "यह भोजन पिता जी आपके लिए है।" याज्ञवल्क्य की व्यवस्था है "वसु, रूद्र और आदित्य हमारे पितर हैं। वे श्राद्ध के देवता हैं। पितरों का ध्यान वसु रूद्र और आदित्य के रूप में ही करना चाहिए। वृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य ने शाकल्य को रूद्र और वसु का वास्तविक अर्थ समझाया है। यहां पृथ्वी, आकाश आदि वसु हैं। प्राण, इन्द्रियां मन आदि रूद्र हैं। आदित्य प्रकाश हैं। पितर श्रद्धा यहां प्रकृति की शक्तियों के प्रति समर्पित दिखाई पड़ती है।

ऋग्वेद के दसवें मण्डल (सूक्त 14) में मृत पितरों पर रोचक विवरण हैं। कहते हैं "यम (नियम) व्यवस्था को कोई बदल नहीं सकता। जिस मार्ग से हमारे पूर्वज गये हैं, उसी मार्ग से सभी मनुष्य जायेंगे। अन्ततः

सबको यम के पास जाना ही पड़ता है।" मृत पिता से कहते हैं "जिस पुरातन मार्ग से पूर्वज पितर गये हैं, आप भी उसी से गमन करें।" फिर यज्ञ कर्म की चर्चा है। यम से प्रार्थना है कि **"आप अंगिरा आदि पितरजनों सहित हमारे यज्ञ में आएं।"** आगे (सूक्त 15) पितरों को नमस्कार निवेदन करते हैं, "जो पितामह आदि पितर पूर्वज या उसके बाद मृत्यु को प्राप्त पितर हैं, या जो फिर से उत्पन्न हो गए हैं। उन सबको नमस्कार है। **इदं पितृभ्यो नमः अस्त्वद्य ये पूर्वासो या उपरास ईयुः।"** फिर कहते हैं, "हे पितरों! हमारे आवाहन पर आप आएं। यज्ञशाला में दक्षिण की ओर कुश में बैठें।" पूर्वजों पितरों का सम्मान और मृत होने के बावजूद उन्हें स्मरण करना आनंददायी है।

उ0प्र0 में विवाह के एक दिन पूर्व महिलाएं लोक गीत गायन करती हैं, गीत में मृत पितरों को निमंत्रण है कि आप सब इस विवाह में आओ। बरात चलो। विवाह में आशीष दो। शास्त्र पुराना है या लोक? कह नहीं सकता। पितरों को निमंत्रण देने वाला लोकगीत पुराना है या ऋग्वेद के पितर सम्बंधी मंत्र? सच क्या है? मैं नहीं जानता पर मृत पितरों को जीवंत जानना स्मरण करना आह्लादकारी है।

कर्मकाण्ड में भी इच्छा या अनिच्छापूर्वक रमते हुए सत्य की जिज्ञासा संभव है। कर्मकाण्ड सचेत भी हो सकते हैं और अचेत भी। दोनो ही स्थिति में अनायास कुछ नया घटित हो सकता है। मृत पितर मृत ही हैं। भारतीय चिन्तन में सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व भी जाना गया है। सूक्ष्म शरीर पर भी प्रश्न उठाए जा सकते हैं। भोजन अर्पण शुद्ध श्रद्धा है। उन्हें मिलता है कि नहीं? ऐसे प्रश्न महत्वपूर्ण होकर भी श्रद्धा के सामने छोटे हैं। हम स्वाभाविक ही पूर्वजों की निन्दा में क्रोध करते हैं। पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने इसी विषय पर सुंदर उदाहरण सुनाया था। कथा के अनुसार एक श्रद्धालु पितृ श्राद्ध कर रहे थे। तार्किक ने पूछा कि क्या यह भोजन उन्हें ही मिलेगा? श्रद्धालु ने प्रश्नकर्ता के पिता को गाली दी। प्रश्नकर्ता गुस्से में आ गया। श्रद्धालु ने कहा कि आप बेकार गुस्से में हैं। आपके पिता तक यह गाली तो पहुंची ही नहीं। वे मृत हैं इसलिए गाली उन्हें मिल भी नहीं सकती। प्रश्नकर्ता निरुत्तर थे। श्राद्ध श्रद्धा की ही अभिव्यक्ति है। श्रद्धा के कारण ही पत्थर में भी शिव दर्शन की संभावनाएं हैं।

श्रद्धा प्रगाढ़ भाव है। यह अंधविश्वास नहीं है। इसकी अपनी उपयोगिता है। श्रद्धालु विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोते। ऋग्वेद में श्रद्धा को देवता कहा गया है। वरिष्ठजनों के प्रति आदरभाव श्रेष्ठ सामाजिक संगठन की आधारशिला है। वरिष्ठ और पूर्वज हमसे पहले से इस संसार में हैं। उनके अनुभव प्रगाढ़ हैं। माथापच्ची बेकार है कि वे भोजन या सम्मान चाहते हैं कि नहीं चाहते। मूल बात यही है कि हम उन्हें सम्मान और श्रद्धा भाव देकर स्वयं का आत्मबल बढ़ाते हैं और सामाजिक कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। संप्रति वरिष्ठों का सम्मान घटा है। मृत माता पिता के प्रति श्रद्धा दूर की बात है, जीवित माता पिता भी फफक रहे हैं। श्राद्ध सामान्य कर्मकाण्ड नहीं है। हमारे पूर्वजों ने ही सुंदर समाज के लिए ऐसे सुंदर कर्मकाण्ड को गढ़ा है। इस कर्मकाण्ड में स्वयं के भीतर पूर्वजों के प्रवाह का पुनर्सृजन संभव है। अग्रजो, मार्गदर्शक, पूर्वजो और मंत्रद्रष्टा पितरों को नमस्कार करते मन नहीं अघाता। ऋग्वेद के ऋषि ने सही गाया है—**इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृभ्यः।**

(जयंती विशेष)

निष्काम कर्मयोगी "भाई जी"

श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार जी जिन्हें प्रायः गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित मासिक पत्र कल्याण के आदि संपादक के रूप में जाना जाता है, वे वस्तुतः एक दिव्य विभूति थे। अपनी जन्मभूमि रतनगढ़, राजस्थान से निकलकर उन्होंने व्यापार किया। अपार हानि सही। किंतु साधक उच्च कोटि के थे। उन्होंने पराधीन भारत में सनातन यात्रा करके मात्र आठ आने में रामचरितमानस को घर–घर पहुँचाने का कार्य किया था।

पोद्दार जी को स्नेहवश सभी "भाईजी" कहकर प्रायः संबोधित करते थे। एक दिन पूजन के समय समाधिस्थ अवस्था में उन्हें लगा कि जैसे स्वयं श्री किशोरी जी (श्रीराधारानी) उन्हें संदेश दे रही हों कि– "मुगलकाल के भीषण अत्याचारोंदृहाहाकार ों के मध्य कांपती हुई आस्था को . अचलाश्रय प्रदान करने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी का श्री रामचरित मानस केवल आठ आने (पचास पैसे) में जनदृजन को प्रदान करो" उन्होंने उसी अवस्था में उत्तर दिया कि "जब आप करा रही हैं तो क्यों नहीं होगा।"

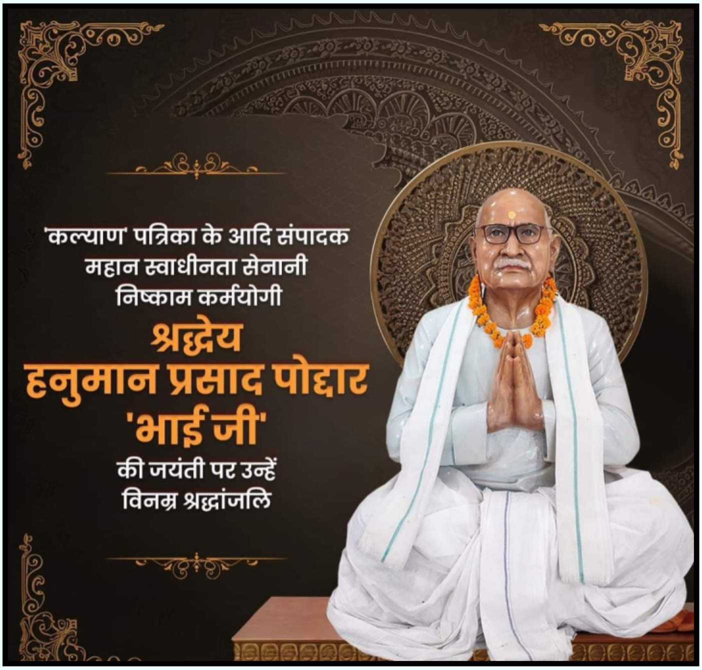

पूजन के पश्चात भोजन करके वे वामकुक्षी (बाईं करवट लेटना) किया करते थे। वो लेटे ही थे कि ध्यानावस्था में फिर एक ध्वनि सुनी कि "अरे, तुम लेट गए। कार्य कैसे संपन्न होगा?" तुरंत उठकर बैठ गए। कागज–पेंसिल लेते ही मन में विचार आया कि मानस के इस प्रथम संस्करण की पचास हजार प्रतियां प्रकाशित होनी चाहिए। कागजदृकंपोजिंग (जो उन दिनों टाइप सेटिंग से हुआ करती थी) छपाई आदि का व्यय लगाने पर यह भी विचार किया की यह घर में छः आने (37 पैसे) की पड़नी चाहिए। एक आना (6 पैसे) तो विक्रेता भी चाहेगा। और एक आना व्यय के लिए, सब जोड़ घटाकर देखा कि, एक लाख पैंतीस हजार रू0 (उस जमाने के जब सोने का भाव बीस–बाइस रू0 तोला हुआ करता था) का घाटा आता है।

वे हिसाब लगाकर अपनी पत्नी से बोले, "हमारा झोला लगा दो। हमें कलकत्ते जाना है।" झोला क्या धोती'–कुर्ता, लंगर–बंडी, संध्या पात्र, और माला, लग गया झोला। गोरखपुर स्टेशन जाकर, टिकिट लेकर रेल में जा बैठे। कलकत्ता जाकर एक पैड़ी पर उतर गए। मारवाड़ी संस्कृति में पेड़ी सेठ–साहूकारों की गद्दी को कहते हैं। उनके पहुंचते ही चारों ओर "भाईजी आओ–पधारो" की ध्वनि ऐसे गूंजने लगी मानो किसी देवपुरुष का ही अवतरण हो गया हो। पेड़ी के स्वामी ने प्रश्न किया, "भाईजी! थे (आप) कदसी पधारे?" भाईजी ने उत्तर दियादृ "गोरखपुर से सीधे चले आ रहे हैं।"

"तो आप स्नान–पूजनादि कर निवास पर भोजन करने पधारिए।"

"ठीक है, भोजन तो करेंगे! किंतु दक्षिणा लेकर करेंगे।"

"तो अब बाणियों ने भी भोजन दक्षिणा लेकर करने की परंपरा आरंभ कर दी क्या?"

"हां, ब्राह्मण भोजन करके दक्षिणा ले, और वैश्य दक्षिणा लेकर भोजन करे।" कहते हुए हिसाब का पर्चा जो गोरखपुर में तैयार किया था, वह उनके सामने रख

दिया।

पर्चा देखकर सेठ बोले "जब रामजी ने कहा है तो वे सब करेंगे। आप उठकर स्नानादि करें।"

भाईजी कुछ ही समय में स्नानदृपूजन से निवृत्त होकर आ गए। सेठ बोले, "चलिए, बग्घी तैयार है।"

"ठीक है हम चलते हैं किंतु हम दक्षिणा लेकर ही भोजन करेंगे। थाली लाकर अन्न भगवान का अपमान न करा देना, यही कहना है।"

"ठीक है, आप उठिए तो सही" भाईजी सेठ के निवास पर आ पहुंचे। देखा कि वहां दो भद्र–पुरुष पहले से बैठे थे। थाली खाली रखी हुई थी। भाईजी के बैठते ही दोनों सज्जनों ने अपनी–अपनी ओर से मोड़कर दो चैक थाली के पास रख दिए। इतने में ही नीचे से आवाज आई "ब्याई जी सा (समधीजी)" और उत्तर में "आओ–आओ, पधारो–पधारो," कहते ही दो सज्जनों ने प्रवेश किया, थाली के पास अपने – अपने चेक रखकर बैठ गए। तभी अंदर से सेठ जी की वृद्धा माता नाभिस्पर्शी घूंघट काढ़े (निकाले) हुए, धीरे – धीरे सरकती हुई आईं और उन्होंने पैंतीस हजार रुपये नगद रख दिए।

चारों चेक पच्चीस–पच्चीस हज़ार अर्थात् एक लाख के थे। एक लाख पैंतीस हजार कि पूर्ति पर्चे के अनुसार देखकर, भाईजी हंसते हुए बोले, "शीघ्रता से भोजन लाओ, भूख भयंकर लग रही है।"

तभी हंसते हुए सेठ बोले,"भाईजी! थे कच्चे बनिये हो! अरे, इतना पांच–छः सौ पृष्ठों का मोटा ग्रंथ बिना जिल्द के दोगे क्या? दो दिन में हाथ में आ जाएगा।"

भाईजी को सोच में पड़ा देखकर सेठ जी बोले, "जिस समय आप निवृत्त होने चले गए थे, उसी समय हमने एक जिल्दसाज को बुलाकर, ब्यौरा ले लिया था। दस–बारह हजार का उसने खर्चा बताया। यह पन्द्रह हज़ार मानकर, एक सेवक को भेजकर डेढ़ लाख का ड्राफ्ट तैयार करा लिया। यह दक्षिणा लीजिए और बाणिया श्रेष्ठ कांसा आरोगिए (भोजन कीजिए)। भोजन करते ही भाईजी बोले, "अब गोरखपुर जाने वाली गाड़ी का क्या समय है?"

"अभी तीन–चार घंटे हैं। आप पैड़ी पर पहुंचकर अपने वामकुक्षी धर्म का निर्वाह कीजिए। आपको गाड़ी पर पहुंचा दिया जाएगा।"

श्रीभाईजी अगले दिन गोरखपुर पहुंच गए। श्री रामचरित मानस की कंपोजिंग युद्धस्तर पर होने लगी। डेढ़ मास के अंदर–अंदर मानस की प्रतियां बाजार में आकर, घर–घर पहुंचने लगीं। मानस के सुंदरकांड और अखंड पाठों की बाढ़ आ गई। प्रवचनकर्ताओं की पौध देश के धार्मिक क्षेत्र में हरितिमा का संचार करने लगी। मानस के पश्चात समग्र तुलसी–सूर के साथ अनेकानेक संतों का साहित्य मुद्रित होने लगा।

आठ आने के चमत्कार से देश का वातावरण चमत्कृत हो उठा। अपने कार्य की पूर्ति के लिए श्रीसीताराम जी ने जिन्हें निमित्त के रूप में निर्वाचित (मनोनीत) किया वे श्रीभाईजी हनुमान प्रसाद जी पोद्दार विश्वभर के श्रीराम–भक्तों के लिए स्मरणीय बन गए।

स्वच्छ भारत मिशन : जन आन्दोलन

मेरा मन भी तभी गर्व से भर जाता है, जब मैं 'मन की बात' के लिए आयी चिट्ठियों को पढ़ता हूँ। हमारे देश में कितने प्रतिभावान लोग हैं, उनमें देश और समाज की सेवा करने का कितना जज्बा है। वो लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा करने में अपना पूरा जीवन समर्पित कर देते हैं। उनके बारे में जानकर मैं ऊर्जा से भर जाता हूँ। 'मन की बात' की ये पूरी प्रक्रिया मेरे लिए ऐसी है, जैसे मंदिर जा करके ईश्वर के दर्शन करना। 'मन की बात' के हर बात को, हर घटना को, हर चिट्ठी को मैं याद करता हूँ तो ऐसे लगता है मैं जनता जनार्दन जो मेरे लिए ईश्वर का रूप है मैं उनका दर्शन कर रहा हूँ।

मैं आज दूरदर्शन, प्रसार भारती और All India Radio से जुड़े सभी लोगों की भी सराहना करूंगा। उनके अथक प्रयासों से 'मन की बात' इस महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुंचा है। मैं विभिन्न TV channels को, Regional TV channels का भी आभारी हूँ जिन्होनें लगातार इसे दिखाया है। 'मन की बात' के द्वारा हमने जिन मुद्दों को उठाया, उन्हें लेकर कई Media Houses ने मुहिम भी चलाई। मैं Print media को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होनें इसे घर–घर तक पहुंचाया। मैं उन YouTubers को भी धन्यवाद दूंगा जिन्होनें 'मन की बात' पर अनेक कार्यक्रम किए। इस कार्यक्रम को देश की 22 भाषाओं के साथ 12 विदेशी भाषाओं में भी सुना जा सकता है। मुझे अच्छा लगता है जब लोग ये कहते हैं कि उन्होनें 'मन की बात' कार्यक्रम को अपनी स्थानीय भाषा में सुना। आप में से बहुत से लोगों को ये पता होगा कि 'मन की बात' कार्यक्रम पर आधारित एक Quiz Competition भी चल रहा है, जिसमें, कोई भी व्यक्ति हिस्सा ले सकता है। MyGov-in पर जाकर आप इस competition में हिस्सा ले सकते हैं और ईनाम भी जीत सकते हैं। आज इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर, मैं एक बार फिर आप सबसे आशीर्वाद माँगता हूँ। पवित्र मन और पूर्ण समर्पण भाव से, मैं इसी तरह, भारत के लोगों की महानता के गीत गाता रहूँ। देश की सामूहिक शक्ति को, हम सब, इसी तरह celebrate करते रहें – यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है, जनता–जनार्दन से प्रार्थना है।

मन की बात

पिछले कुछ सप्ताह से देश के अलग–अलग हिस्सों में जबरदस्त बारिश हो रही है। बारिश का ये मौसम, हमें याद दिलाता है कि 'जल–संरक्षण' कितना जरूरी है, पानी बचाना कितना जरूरी है। बारिश के दिनों में बचाया गया पानी, जल संकट के महीनों में बहुत मदद करता है, और यही 'Catch the Rain' जैसे अभियानों की भावना है। मुझे खुशी है कि पानी के संरक्षण को लेकर कई लोग नई पहल कर रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास उत्तर प्रदेश के झांसी में देखने को मिला है। आप जानते ही हैं कि 'झांसी' बुंदेलखंड में है, जिसकी पहचान, पानी की किल्लत से जुड़ी हुई है। यहाँ, झांसी में कुछ महिलाओं ने घुरारी नदी को नया जीवन दिया है। ये महिलाए Self help group से जुड़ी हैं और उन्होनें 'जल सहेली' बनकर इस अभियान का नेतृत्व किया है। इन महिलाओं ने मृतप्राय हो चुकी घुरारी नदी को जिस तरह से बचाया है, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इन जल सहेलियों ने बोरियों में बालू भरकर चेकडैम (Check Dam) तैयार किया, बारिश का पानी बर्बाद होने से रोका और नदी को पानी से लबालब कर दिया। इन महिलाओं ने सैकड़ों जलाशयों के निर्माण और उनके Revival में भी बढ़–चढ़ कर हाथ बटाया है। इससे इस क्षेत्र के लोगों की पानी की समस्या तो दूर हुई ही है, उनके चेहरों पर, खुशियां भी लौट आई हैं।

कहीं नारी–शक्ति, जल–शक्ति को बढ़ाती है तो कहीं जल–शक्ति भी नारी–शक्ति को मजबूत करती है। मुझे मध्य प्रदेश के दो बड़े ही प्रेरणादायी प्रयासों की जानकारी मिली है। यहाँ डिण्डौरी के रयपुरा गाँव में एक बड़े तालाब के निर्माण से भू–जल स्तर काफी बढ़ गया है। इसका फायदा इस गाँव की महिलाओं को मिला। यहाँ 'शारदा आजीविका स्वयं सहायता समूह' इससे जुड़ी महिलाओं को मछली पालन का नया व्यवसाय भी मिल गया। इन महिलाओं ने Fish&Parlour भी शुरू किया है, जहाँ होने वाली मछलियों की बिक्री से उनकी आय भी बढ़ रही है। मध्य प्रदेश के छतरपुर में भी महिलाओं का प्रयास बहुत सराहनीय है। यहाँ के खोंप गाँव का बड़ा तालाब जब सूखने लगा तो महिलाओं ने इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। 'हरी बगिया स्वयं सहायता समूह' की इन महिलाओं ने तालाब से बड़ी मात्रा में

गाद निकाली, तालाब से जो गाद निकली उसका उपयोग उन्होंने बंजर जमीन पर तिनपज वितमेज तैयार करने के लिए किया। इन महिलाओं की मेहनत से ना सिर्फ तालाब में खूब पानी भर गया, बल्कि, फसलों की उपज भी काफी बढ़ी है। देश के कोने–कोने में हो रहे 'जल संरक्षण' के ऐसे प्रयास पानी के संकट से निपटने में बहुत मददगार साबित होने वाले हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि आप भी अपने आसपास हो रहे ऐसे प्रयासों से जरूर जुड़ेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, उत्तराखंड के उत्तरकाशी में एक सीमावर्ती गाँव है 'झाला'। यहां के युवाओं ने अपने गाँव को स्वच्छ रखने के लिए एक खास पहल शुरू की है। वे अपने गाँव में 'धन्यवाद प्रकृति' या कहें 'Thank you Nature' अभियान चला रहे हैं। इसके तहत गाँव में रोजाना दो घंटे सफाई की जाती है। गाँव की गलियों में बिखरे हुए कूड़े को समेटकर, उसे, गाँव के बाहर, तय जगह पर, डाला जाता है। इससे झाला गाँव भी स्वच्छ हो रहा है और लोग जागरूक भी हो रहे हैं। आप सोचिए, अगर ऐसे ही हर गाँव, हर गली–हर मोहल्ला, अपने यहां ऐसा ही Thank You अभियान शुरू कर दे, तो कितना बड़ा परिवर्तन आ सकता है।

स्वच्छता को लेकर पुडुचेरी के समुद्र तट पर भी जबरदस्त मुहिम चलाई जा रही है। यहां रम्या जी नाम की महिला, माहे municipality और इसके आसपास के क्षेत्र के युवाओं की एक टीम का नेतृत्व कर रही है। इस टीम के लोग अपने प्रयासों से माहे Area और खासकर वहाँ के Beaches को पूरी तरह साफ–सुथरा बना रहे हैं।

मैंने यहां सिर्फ दो प्रयासों की चर्चा की है, लेकिन, हम आसपास देखें, तो पाएंगे कि देश के हर किसी हिस्से में, 'स्वच्छता' को लेकर कोई–ना–कोई अनोखा प्रयास जरूर चल रहा है। कुछ ही दिन बाद आने वाले 2 अक्टूबर को 'स्वच्छ भारत मिशन' के 10 साल पूरे हो रहे हैं। यह अवसर उन लोगों के अभिनंदन का है जिन्होंने इसे भारतीय इतिहास का इतना बड़ा जन–आंदोलन बना दिया। ये महात्मा गांधी जी को भी सच्ची श्रद्धांजलि है, जो जीवनपर्यंत, इस उद्देश्य के लिए समर्पित रहे।

आज ये 'स्वच्छ भारत मिशन' की ही सफलता है कि Waste to Wealth का मंत्र लोगों में लोकप्रिय हो रहा है। लोग 'Reduce, Reuse और Recycle' पर बात करने लगे हैं, उसके उदाहरण देने लगे हैं। अब जैसे मुझे केरला में कोझिकोड में एक शानदार प्रयास के बारे में पता चला। यहां `मअमदजल विनत (74) year के सुब्रह्मण्यम जी 23 हजार से अधिक कुर्सियों की मरम्मत करके उन्हें दोबारा काम लायक बना चुके हैं। लोग तो उन्हें 'Reduce, Reuse, और Recycle, यानि, RRR (Triple R) Champion भी कहते हैं। उनके इन अनूठे प्रयासों को कोझिकोड सिविल स्टेशन, PWD और LAC के दफ्तरों में देखा जा सकता है।

स्वच्छता को लेकर जारी अभियान से हमें ज्यादा–से–ज्यादा लोगों को जोड़ना है, और यह एक अभियान, किसी एक दिन का, एक साल का, नहीं होता है, यह युगों–युगों तक निरंतर करने वाला काम है। यह जब तक हमारा स्वभाव बन जाए 'स्वच्छता', तब तक करने का काम है। मेरा आप सबसे आग्रह है कि आप भी अपने परिवार, दोस्तों, पड़ोसियों या सहकर्मियों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान में हिस्सा जरूर लें। मैं एक बार फिर 'स्वच्छ भारत मिशन' की सफलता पर आप सभी को बधाई देता हूँ।

हम सभी को अपनी विरासत पर बहुत गर्व है। और मैं तो हमेशा कहता हूँ 'विकास भी–विरासत भी'। यही वजह है कि मुझे हाल की अपनी अमेरिका यात्रा के एक खास पहलू को लेकर बहुत सारे संदेश मिल रहे हैं। एक बार फिर हमारी प्राचीन कलाकृतियों की वापसी को लेकर बहुत चर्चा हो रही है। मैं इसे लेकर आप सबकी भावनाओं को समझ सकता हूँ और 'मन की बात' के श्रोताओं को भी इस बारे में बताना चाहता हूँ।

अमेरिका की मेरी यात्रा के दौरान अमेरिकी सरकार ने भारत को करीब 300 प्राचीन कलाकृतियों को वापस लौटाया है। अमेरिका के राष्ट्रपति बाइडेन ने पूरा अपनापन दिखाते हुए डेलावेयर (Delaware) के अपने निजी आवास में इनमें से कुछ कलाकृतियों को मुझे दिखाया। लौटाई गई कलाकृतियाँ Terracott, Stone, हाथी के दांत, लकड़ी, तांबा और कांसे जैसी चीजों से बनी हुई हैं। इनमें से कई तो चार हजार साल पुरानी हैं। चार हजार साल पुरानी कलाकृतियों से लेकर 19वीं सदी तक की कलाकृतियों को अमेरिका ने वापस किया है – इनमें फूलदान, देवी–देवताओं की टेराकोटा (Terracotta) पट्टिकाएं, जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के अलावा भगवान बुद्ध और भगवान श्री कृष्ण की मूर्तियाँ भी शामिल हैं। लौटाई गई चीजों में पशुओं की कई आकृतियाँ भी हैं। पुरुष और महिलाओं की आकृतियों वाली जम्मू–कश्मीर की Terracotta tiles तो बेहद ही दिलचस्प हैं। इनमें कांसे से बनी भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमाएं भी हैं, जो, दक्षिण भारत की हैं। वापस की गई चीजों में बड़ी संख्या में भगवान विष्णु की तस्वीरें भी हैं। ये मुख्य रूप से उत्तर और दक्षिण भारत से जुड़ी हैं। इन कलाकृतियों को देखकर पता चलता है कि हमारे पूर्वज बारीकियों का कितना ध्यान रखते थे। कला को लेकर उनमें गजब की सूझ–बूझ थी। इनमें से बहुत सी कलाकृतियों को तस्करी और दूसरे अवैध तरीकों से

देश के बाहर ले जाया गया था – यह गंभीर अपराध है, एक तरह से यह अपनी विरासत को खत्म करने जैसा है, लेकिन मुझे इस बात की बहुत खुशी है, कि पिछले एक दशक में, ऐसी कई कलाकृतियां, और हमारी बहुत सारी प्राचीन धरोहरों की, घर वापसी हुई है। इस दिशा में, आज, भारत कई देशों के साथ मिलकर काम भी कर रहा है। मुझे विश्वास है जब हम अपनी विरासत पर गर्व करते हैं तो दुनिया भी उसका सम्मान करती है, और उसी का नतीजा है कि आज विश्व के कई देश हमारे यहाँ से गई हुई ऐसी कलाकृतियों को हमें वापस दे रहे हैं।

मेरे प्यारे साथियो, अगर मैं पूछूं कि कोई बच्चा कौन सी भाषा सबसे आसानी से और जल्दी सीखता है – तो आपका जवाब होगा 'मातृ भाषा'। हमारे देश में लगभग बीस हजार भाषाएं और बोलियाँ हैं और ये सब की सब किसी–न–किसी की तो मातृ–भाषा है ही हैं। कुछ भाषाएं ऐसी हैं जिनका उपयोग करने वालों की संख्या बहुत कम है, लेकिन आपको यह जानकर खुशी होगी, कि उन भाषाओं को संरक्षित करने के लिए, आज, अनोखे प्रयास हो रहे हैं। ऐसी ही एक भाषा है हमारी 'संथाली' भाषा। 'संथाली' को digital Innovation की मदद से नई पहचान देने का अभियान शुरू किया गया है। 'संथाली', हमारे देश के कई राज्यों में रह रहे संथाल जनजातीय समुदाय के लोग बोलते हैं। भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल और भूटान में भी संथाली बोलने वाले आदिवासी समुदाय मौजूद हैं। संथाली भाषा की online पहचान तैयार करने के लिए ओडिशा के मयूरभंज में रहने वाले श्रीमान रामजीत टुडु एक अभियान चला रहे हैं। रामजीत जी ने एक ऐसा digital platform तैयार किया है, जहां संथाली भाषा से जुड़े साहित्य को पढ़ा जा सकता है और संथाली भाषा में लिखा जा सकता है। दरअसल कुछ साल पहले जब रामजीत जी ने मोबाईल फोन का इस्तेमाल शुरू किया तो वो इस बात से दुखी हुए कि वो अपनी मातृभाषा में संदेश नहीं दे सकते! इसके बाद वो 'संथाली भाषा' की लिपि 'ओल चिकी' को टाईप करने की संभावनाएं तलाश करने लगे। अपने कुछ साथियों की मदद से उन्होंने 'ओल चिकी' में टाईप करने की तकनीक विकसित कर ली। आज उनके प्रयासों से 'संथाली' भाषा में लिखे लेख लाखों लोगों तक पहुँच रहें हैं।

जब हमारे दृढ़ संकल्प के साथ सामूहिक भागीदारी का संगम होता है तो पूरे समाज के लिए अदभुत नतीजे सामने आते हैं। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है 'एक पेड़ मां के नाम' – ये अभियान अदभुत अभियान रहा, जन–भागीदारी का ऐसा उदाहरण वाकई बहुत प्रेरित करने वाला है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर शुरू किये गए इस अभियान में देश के कोने–कोने में लोगों ने कमाल कर दिखाया है। उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और तेलंगाना ने लक्ष्य से अधिक संख्या में पौधारोपण कर नया रिकार्ड बनाया है। इस अभियान के तहत उत्तर प्रदेश में 26 करोड़ से ज्यादा पौधे लगाए गए। गुजरात के लोगों ने 15 करोड़ से ज़्यादा पौधे रोपे। राजस्थान में केवल अगस्त महीने में ही 6 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं। देश के हजारों स्कूल भी इस अभियान में जोर–शोर से हिस्सा ले रहें हैं।

मेरे प्यारे साथियो, आपने देखा होगा, हमारे आस–पास कुछ लोग ऐसे होते हैं जो आपदा में धैर्य नहीं खोते, बल्कि उससे सीखते हैं। ऐसी ही एक महिला है सुबाश्री, जिन्होंने अपने प्रयास से, दुर्लभ और बहुत उपयोगी जड़ी–बूटियों का एक अद्भुत बगीचा तैयार किया है। वो तमिलनाडु के मदुरई की रहने वाली हैं। वैसे तो पेशे से वो एक टीचर हैं, लेकिन औषधीय वनस्पतियों, Medical Herbs के प्रति इन्हें गहरा लगाव है। उनका ये लगाव 80 के दशक में तब शुरू हुआ, जब एक बार, उनके पिता को जहरीले सांप ने काट लिया। तब पारंपरिक जड़ी–बूटियों ने उनके पिता की सेहत सुधारने में काफी मदद की थी। इस घटना के बाद उन्होंने पारंपरिक औषधियों और जड़ी–बूटियों की खोज शुरू की। आज, मदुरई के वेरिचियुर गाँव में उनका अनोखा Herbal Garden है, जिसमें, 500 से ज्यादा दुर्लभ औषधीय पौधे हैं। अपने इस बगीचे को तैयार करने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की है। एक–एक पौधे को खोजने के लिए उन्होंने दूर–दूर तक यात्राएं कीं, जानकारियाँ जुटाईं और कई बार दूसरे लोगों से मदद भी मांगी। कोविड के समय उन्होंने Immunity बढ़ाने वाली जड़ी–बूटियाँ लोगों तक पहुँचाई। आज उनके Herbal Garden को देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं। वो सभी को Herbal पौधों की जानकारी और उनके उपयोग के बारे में बताती हैं। सुबाश्री हमारी उस पारंपरिक विरासत को आगे बढ़ा रही हैं, जो सैकड़ों वर्षों से, हमारी संस्कृति का हिस्सा है। उनका Herbal Garden हमारे अतीत को भविष्य से जोड़ता है। उन्हें हमारी ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

श्रद्धांजलि

शोक संदेश

श्रीमती नीलम करवरिया 'पंचतत्व' में विलीन

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी व प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने भाजपा की पूर्व विधायक श्रीमती नीलम करवरिया के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त की है।

श्रीमती नीलम करवरिया जी (2 जुलाई 1969 – 26 सितंबर 2024) भारतीय जनता पार्टी की एक भारतीय राजनीतिज्ञ थीं। उन्होंने मेजा, इलाहाबाद से 2017 उत्तर प्रदेश विधान सभा से चुनाव जीता और 17वीं उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्य थीं। जब उन्होंने चुनाव प्रचार शुरू किया तो उनके विरोधियों ने उन्हें बाहरी कहा और इस वजह से वे गांव में रहने लगीं। उन्हें 67,807 वोट मिले जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार को 47,964 वोट मिले। उनकी शादी भाजपा के पूर्व विधायक उदयभान करवरिया से हुई थी और उनके तीन बच्चे, दो बेटियाँ समृद्धि करवरिया, साक्षी करवरिया और एक बेटा सक्षम करवरिया। करवरिया का 26 सितंबर 2024 को 55 वर्ष की आयु में हैदराबाद में निधन हो गया।

करवरिया जी के निधन से क्षेत्र सहित भारतीय जनता पार्टी में शोक की लहर दौड़ गयी। भाजपा उ0प्र0 ने उनके निधन को अपूर्णनीय क्षति बताया। कमल ज्योति परिवार भी शोक सम्वेदना व्यक्त करता है।

शांति, स्थिरता और विकास
जम्मू-कश्मीर को मोदी पर

B.
J.
P.
श्रीमद् भगवद्गीता
LG

के नाम

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोड: UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
सितम्बर द्वितीय अंक 2024 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।